- 19th Year
- Issue: 209
- 02.12.2025 (TUESDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

e-paper-www.thekalingasamachar.com

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

एसआईआर पर बवाल, विपक्ष का जोरदार हंगामा

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): संसद का शीतकालीन सत्र आज से शुरू हो गया। इस सत्र में 19 दिनों की अवधि में कुल 15 बैठकें होंगी। विपक्षी सांसदों द्वारा बार-बार की गई नारेबाजी और विरोध प्रदर्शन के बाद लोकसभा की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11ः00 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। प्रदर्शनकारी विपक्षी सांसदों की मुज्य माँग देश भर में मतदाता सूचियों से संबंधित विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अज्यास पर चर्चा कराना था।

वहीं, संसद के शीतकालीन सत्र के आरंभ में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति सी.पी. राधाकृष्णन का हार्दिक स्वागत किया। राधाकृष्णन पहली बार उच्च सदन की अध्यक्षता करने के लिए संसद पहुँचे, जिससे उनके अध्यक्ष पद पर कार्यकाल की शुरुआत हुई। संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन

सोमवार को लोकसभा में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और कुछ अन्य मुद्दों को लेकर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण कार्यवाही बाधित रही और सदन की बैठक दो बार के स्थगन के बाद दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। हंगामे के बीच ही लोकसभा ने 'मणिपुर माल और सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2025' पारित किया। विपक्षी सदस्यों की नारेबाजी के बीच ही विज़ मंत्री निर्मला सीतारमण ने 'केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025' और 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पेश किया।

राज्यसभा के सभापति सी पी राधाकृष्णन ने सोमवार को उच्च सदन में अपने प्रथम संबोधन में सदस्यों से संविधान के प्रति निष्ठावान रहने और संसदीय आचरण की निर्धारित 'लक्ष्मण रेखा' का पालन करने की अपील की।

उन्होंने कहा कि उच्च सदन के पास बहुत विधायी कार्य हैं और समय को लेकर सदस्यों व पीठ दोनों के सामने चुनौती होगी। राधाकृष्णन ने कहा, हर कोई — चाहे सभापति हों या सदस्य — हम सभी को राष्ट्र के प्रति अपनी जिज़्मेदारियों को समझना चाहिए। भारत का संविधान और राज्यसभा के नियम हमारे संसदीय आचरण की लक्ष्मण रेखा तय करते हैं। हर सदस्य के अधिकारों की रक्षा की जाएगी, लेकिन उस लक्ष्मण रेखा के भीतर ही।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने सोमवार को राज्यसभा में कहा कि सरकार मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर चर्चा की विपक्ष की मांग पर विचार कर रही है और इस मांग को खारिज नहीं किया गया है। वहीं विपक्ष ने इस मुद्दे पर तत्काल चर्चा नहीं कराए जाने पर सदन से बहिर्गमन किया।

उच्च सदन में विपक्ष की इस मुद्दे पर तत्काल चर्चा कराए जाने की मांग पर रीजीजू ने विपक्ष से कहा कि वह एसआईआर, चुनाव सुधारों पर चर्चा के समय के लिए कोई शर्त नहीं रखे। तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य डेरेक ओ ब्रायन ने सोमवार को सभापति सी.पी. राधाकृष्णन से मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया पर चर्चा कराने का आग्रह किया और इस बात पर जोर दिया कि वह राज्य सभा के संरक्षक हैं।

राज्यसभा में सोमवार को प्रधानमंत्री, सदन के नेता, नेता प्रतिपक्ष सहित विभिन्न दलों के नेताओं ने नये सभापति सी पी राधाकृष्णन को यह दायित्व संभालने के लिए बधाई देते हुए उज़्मीद जतायी कि सांसद के रूप में उनके अनुभव से सदन के कुशल संचालन में मदद मिलेगी।

कई दलों के सदस्यों ने सदन के सभी पक्षों को बोलने का समान अवसर देने का अनुरोध किया। राधाकृष्णन का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि साधारण पृष्ठभूमि से उठकर सी. पी. राधाकृष्णन का उपराष्ट्रपति पद तक पहुंचना भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति को प्रदर्शित करता है। उन्होंने उज्मीद जताई कि उनका अनुभव और मार्गदर्शन उच्च सदन की कार्यवाही के सुचारू संचालन में सहायक होगा।

गुटखा-पान मसाला पर कड़ा प्रहार! नई कर व्यवस्था से राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वास्थ्य को मिलेगा बूस्ट

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): जीएसटी को तर्कसंगत बनाने की प्रक्रिया के दौरान तंबाकू से संबंधित वस्तुओं पर %सीन टैज़्स% लगाने के बाद, विज़ मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को लोकसभा में स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025 पेश किया। इस विधेयक में रक्षा और जन स्वास्थ्य व्यय के विज़पोषण के लिए पान मसाला और गुटखा निर्माताओं पर एक कठोर नई कर व्यवस्था का प्रस्ताव रखा गया है। विधेयक के अनुसार, प्रस्तावित उपकर पान मसाला और गुटखा सहित विशिष्ट वस्तुओं के निर्माण या उत्पादन के लिए स्थापित मशीनों या प्रक्रियाओं पर लगाया जाएगा।इसमें कहा गया है, स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक में उन मशीनों या प्रक्रियाओं पर उपकर लगाने का प्रस्ताव है जिनके द्वारा निर्दिष्ट वस्तु, अर्थात् पान

मसाला, का निर्माण या उत्पादन किया जाता है, चाहे वह मैन्युअल रूप से हो या हाइब्रिड प्रक्रियाओं के माध्यम से। यह विधेयक एक व्यापक अनुपालन और प्रवर्तन ढाँचा प्रस्तुत करता है। यह कर योग्य व्यक्तियों को उन लोगों के रूप में परिभाषित करता है जो निर्दिष्ट वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त मशीनों के स्वामी, धारक, संचालक या नियंत्रक हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष रूप से हों या श्रमिकों या अनुबंधित संस्थाओं के माध्यम से। उपकर उत्पादन की मात्रा की परवाह किए बिना देय होगा, और देयता मशीन की गति, क्षमता या निर्माताओं द्वारा घोषित प्रक्रिया मापदंडों पर आधारित होगी।

विधेयक में आगे कहा गया है कि, उपकर मशीनों या अन्य प्रक्रियाओं की उत्पादन क्षमता से जुड़ा है, न कि ऐसी निर्दिष्ट वस्तुओं के वास्तव में उत्पादित मात्रा से। यह विधेयक केंद्र को विशेष परिस्थितियों में निर्धारित राशि से दोगुने तक उपकर बढ़ाने का अधिकार देता है और जनहित में अधिसूचना के माध्यम से छूट प्रदान करता है। उपकर के माध्यम से एकत्रित धनराशि भारत की संचित निधि में जमा की जाएगी।

विपक्ष संसद का इस्तेमाल अपनी हताशा निकालने के लिए कर रहा-मोदी

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्ष पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वह संसद को चुनावी हार के बाद हताशा निकालने का मंच बना रहा है। मोदी ने यह भी कहा कि यदि विपक्ष चाहे तो वह राजनीति में सकारात्मकता लाने के कुछ सुझाव देने को तैयार हैं।संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले संसद परिसर में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सत्र राजनीतिक रंगमंच न बने, बल्कि रचनात्मक और परिणामोन्मुखी बहस का माध्यम बने।

उन्होंने कहा, कुछ समय से हमारी संसद या तो चुनावों

के लिए कथित तैयारी की जगह या फिर हार के बाद हताशा निकालने का माध्यम बन गई है।बहार विधानसभा चुनावों में विपक्ष की करारी हार का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि संसद सत्र हार से उपजी निराशा का युद्धक्षेत्र या विजय के बाद अहंकार का मंच नहीं बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार में रिकॉर्ड मतदान लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है और विपक्ष को भी अपनी जिज़्मेदारी निभाते हुए चुनावी हार के बाद के अवसाद से बाहर आना चाहिए। प्रधानमंत्री ने उप राष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन को भी राज्यसभा के सभापति के तौर पर पहले सत्र की अध्यक्षता करने के लिए बधाई और शुभकामनाएं दीं। पूर्व उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने संसद के मानसून सत्र की शुरुआत में 21 जुलाई, 2025 को स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का हवाला देते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद उप राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव हुआ और राधाकृष्णन इस पद पर निर्वाचित हुए।

उप राष्ट्रपति राज्यसभा के सभापति भी होते हैं। उच्च सदन के सभापति के तौर पर शीतकालीन सत्र राधाकृष्णन का पहला सत्र है।

नकली कफ सिरप पर सुको की कार्रवाई

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): सर्वोच्च न्यायालय ने सोमवार को एक स्थानीय कफ सिरप निर्माता को राहत देने से इनकार कर दिया, जिस पर मादक पदार्थों की उच्च सांद्रता वाले फॉर्मूलेशन को वितरित करने का आरोप है। बिना बैच नंबर वाली बोतलों की एक बड़ी खेप बरामद होने के बाद गिरज़्तार किए गए इस आरोपी पर नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सज़्सटेंस (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत मुकदमा चल रहा है। सुनवाई के दौरान, भारत के मुज़्य न्यायाधीश और न्यायमूर्ति जे. बागची की पीठ ने पंजाब और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में नकली और मादक पदार्थों से युक्त दवा उत्पादों के प्रचलन की बढ़ती समस्या पर गंभीर चिंता व्यक्त की।न्यायमूर्ति बागची ने जज़्ती की गंभीरता पर गौर करते हुए कहा, बिना बैच नंबर वाली कफ सिरप की 46,800 बोतलें बरामद की गई हैं। चीफ जस्टिस ने कहा कि मैं पंजाब और हिमाचल प्रदेश में इन नकली दवा निर्माताओं के बारे में जानता हूँ। नियंत्रण आदेश के तहत नियंत्रित सभी दवाएँ इन्हीं के नियंत्रण में हैं। मैंने तीन मामलों में आदेश पारित किए हैं और तीन परिवारों के सदस्यों को गिरज़्तार करवाया है। मैं इन जगहों के बारे में जानता हूँ। पीठ ने कहा कि मुकदमा बिना किसी बाधा के चलना चाहिए। हम गिरज़्तारी में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मुकदमा चलने दीजिए। आरोपी के वकील ने तर्क दिया कि इलाहाबाद और दिल्ली उच्च न्यायालयों ने पहले ही यह मान लिया था कि यह विशेष समाधान एनडीपीएस उल्लंघन नहीं है।

बाबर के नाम पर भारत में नहीं बनेगी कोई मस्जिद, टीएमसी विधायक की टिप्पणी पर दिलीप घोष का पलटवार

कोलकाता ०१/१२ (संवाददाता): भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता दिलीप घोष ने सोमवार को तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) विधायक हुमायूँ कबीर की टिप्पणी पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि लोग अपनी ज़मीन पर पूजा स्थल बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन भारत में मुग़ल शासक बाबर के नाम पर कोई भी संरचना कभी नहीं बनाई जाएगी। कबीर के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए घोष ने कहा, कोई भी अपनी ज़मीन पर मंदिर या मस्जिद बना सकता है, लेकिन भारत में बाबर के नाम पर कोई मस्जिद नहीं बनाई जाएगी। हिंदू समुदाय ने 450 वर्षों तक उसके खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया, उसकी संरचनाओं को नष्ट किया और बाद में राम मंदिर का निर्माण किया। बाबर एक आक्रमणकारी था; उसके नाम पर यहाँ कुछ भी नहीं

बनाया जाएगा। घोष की यह टिप्पणी पश्चिम बंगाल में राजनीतिक बयानबाज़ी के बीच आई है, जब कबीर ने 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद ज़िले के बेलडांगा में एक बाबरी मस्जिद की आधारशिला रखने की अपनी योजना दोहराई। कबीर ने अपना रुख बरकरार रखते हुए कहा कि हम 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद ज़िले के बेलडांगा में बाबरी मस्जिद की आधारशिला रखेंगे। उन्होंने पहले यह घोषणा करके विवाद खड़ा कर दिया था कि इस परियोजना में तीन साल लगेंगे और इसमें विभिन्न मुस्लिम नेता भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि हम 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद ज़िले के बेलडांगा में बाबरी मस्जिद की आधारशिला रखेंगे। इसे पूरा होने में तीन साल लगेंगे। इस कार्यक्रम में विभिन्न मुस्लिम नेता भाग लेंगे। पश्चिम बंगाल के मंत्री सिद्दीकुल्लाह चौधरी द्वारा अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का कड़ा विरोध करने पर तनाव और बढ़ गया। बाबरी मस्जिद के विध्वंस और उसके बाद के घटनाक्रम को अन्यायपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा मस्जिद को जबरन गिराया गया।

कश्मीर में एनआईए की धुआंधार छापेमारी सफेदपोश मॉड्यूल के तार, लाल किला विस्फोट से जुड़ा कनेज़्शन

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) पिछले महीने लाल किला विस्फोट की जाँच के सिलसिले में कश्मीर घाटी में एक साथ छापेमारी कर रही है। केंद्रीय एजेंसी ने पुष्टि की है कि उसने नई दिल्ली में दर्ज एक मामले में आठ जगहों पर छापे मारे हैं और तलाशी ली है। सूत्रों ने बताया कि सोमवार तड़के, एनआईए के जाँचकर्ताओं ने दक्षिण कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में एक साथ तलाशी ली। केंद्रीय जाँच एजेंसी की अलग-अलग टीमों ने दक्षिण कश्मीर के कुलगाम में डॉ. अदील अहमद राठेर और पुलवामा के कोइल गाँव में डॉ. मुज़्मिल शकील गनई के घर पर छापेमारी की। केंद्रीय एजेंसी ने शोपियां में मौलवी मुज़्ती इरफ़ान अहमद वागे और पुलवामा के संबूरा गाँव में

आमिर राशिद के घर पर भी छापेमारी की। इन चारों को जज़्मू-कश्मीर पुलिस ने पिछले महीने पुलिस द्वारा भंडाफोड़ किए गए अंसार ग़ज़वातुल हिंद आतंकी मॉड्यूल के सिलसिले में गिरज़्तार किया था। इस मॉड्यूल में डॉ. उमर नबी समेत चार डॉज़्टर शामिल थे, जो लाल किला मेट्रो स्टेशन के बाहर हुए विस्फोट में कार चला रहा था, जिसमें 13 लोग मारे गए थे और 32 घायल हुए थे। इनमें से तीन-डॉ. अदील, डॉ. मुज़्मिल और लखनऊ निवासी डॉ. शाहीन शाहिद - को लाल किला विस्फोट से पहले फरीदाबाद से गिरज़्तार किया गया था और पुलिस ने उनके पास से 350 किलोग्राम से ज़्यादा अमोनियम नाइट्रेट समेत भारी मात्रा में विस्फोटक बनाने का सामान बरामद किया था। विस्फोट के तुरंत बाद पुलिस ने आमिर राशिद को गिरज़्तार कर लिया था। डॉ. उमर जिस कार को चला रहे थे, उसका नाम यही था। बाद में जज़्मू-कश्मीर पुलिस ने चारों आरोपियों को एनआईए को सौंप दिया।

नई बिहार विधानसभा का आगाज, शपथ ग्रहण के साथ ही विधायकों ने रोजगार, पलायन रोकने और जनहित पर किया फोकस

पटना ०१/१२ (संवाददाता): बिहार की 18वीं विधानसभा का पहला सत्र सोमवार शुरू हुआ, जिसमें विधायकों ने शपथ ली। सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले, मुज़्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुज़्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा के साथ-साथ विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव का विधानसभा पोर्टिको में औपचारिक स्वागत किया गया। प्रोटेम स्पीकर नरेंद्र नारायण यादव ने शपथ ग्रहण सत्र की शुरुआत मंत्रियों और उसके बाद नवनिर्वाचित विधायकों से की।

सत्र से पहले, नवनिर्वाचित विधायकों ने बिहार की जनता और अपने निर्वाचन क्षेत्रों के कल्याण के लिए काम

करने की अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। जद(यू) के नवनिर्वाचित विधायक विनय कुमार चौधरी ने अपने भाषण में जन कल्याण के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि हम जनता के लिए काम करते हैं और करते रहेंगे। इससे बिहार की जनता की सेवा पर पार्टी का ज़ोर झलकता है। लोजपा-रामविलास के नवनिर्वाचित विधायक विष्णु देव पासवान ने बिहार के युवाओं के लिए अपना दृष्टिकोण साझा किया। उन्होंने कहा, मैं रोज़गार के अवसर पैदा करना चाहता हूँ ताकि बिहार के युवाओं को पलायन न करना पड़े। राजनीति के कारण बिहार को वह विकास नहीं मिला जिसका वह हक़दार था। उन्होंने राज्य में आर्थिक विकास और रोज़गार सृजन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

मौजूदा विधानसभा में राजद से निर्वाचित विधायक भाई वीरेंद्र ने राज्य में एनडीए की जीत का विरोध किया। उन्होंने जनता की चिंताओं को आवाज़ देने के विपक्ष के संकल्प पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा मनोबल ऊँचा है और जनता ने हमें वोट दिया है। उन्होंने (एनडीए) जनादेश से नहीं, बल्कि वोट चोरी से सरकार बनाई है। हमारी संज़्या कम हो सकती है, लेकिन चिंताओं को उठाने की हमारी ताकत कम नहीं होगी। बिहार विधानसभा के इतिहास में सबसे कम उम्र की विधायक बनीं भाजपा की नवनिर्वाचित विधायक मैथिली ठाकुर ने कहा कि यह एक बड़ा दिन और एक नए जीवन की शुरुआत है। उन्होंने कहा कि यह मेरे लिए बहुत बड़ा दिन है, ज़्योंकि आज शपथ लेने के बाद मैं विधायक बन जाऊँगी। आज एक नए जीवन की शुरुआत है। पिछले महीने, बिहार के मुज़्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंत्री पद की शपथ लेने वाले नवनिर्वाचित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) विधायकों को कैबिनेट विभाग आवंटित किए, और गृह विभाग सहयोगी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को सौंप दिया। उपमुज़्यमंत्री और भाजपा नेता सम्राट चौधरी को गृह विभाग का प्रभार दिया गया है। 2005 में सज़ा में आने के बाद से कुमार पहली बार गृह विभाग नहीं संभालेंगे।

विविध समाचार

जैविक आतंक पर जयशंकर के भाषण ने दुनिया को झकझोरा, बोले-समय कम है और खतरा तेजी से बढ़ रहा है

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने आज जैविक हथियारों पर दुनिया की सुस्ती और असमानता पर करारा प्रहार करते हुए साफ कहा कि यदि जैव सुरक्षा असमान है, तो वैश्विक सुरक्षा भी असमान होगी। हम आपको बता दें कि Biological Weapons Convention (BWC) के 50 वर्ष पूरे होने पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सज़्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने चेतावनी दी कि दुनिया के पास समय कम है, खतरे तेज़ी से बढ़ रहे हैं और अगर अब भी वैश्विक समुदाय नहीं जागा तो अगली जैविक आपदा किसी सीमा का सज़्मान नहीं करेगी।

विदेश मंत्री जयशंकर ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा कि तेज़ी से आगे बढ़ती जैव प्रौद्योगिकी, जीनोम एडिटिंग, सिंथेटिक बायोलॉजी और एआई आधारित डिजाइनिंग जैसे टूल अब इतने सुलभ हो चुके हैं कि उनका दुरुपयोग पहले से कहीं आसान है। उन्होंने कहा, विज्ञान रज़्तार से दौड़ रहा है, लेकिन वैश्विक नियम घिसटते कदमों से पीछे चल रहे हैं। COVID-19 महामारी को उदाहरण बनाते हुए उन्होंने कहा कि प्राकृतिक हो, आकस्मिक या जानबूझकर, जैविक खतरा किसी चेतावनी के इंतज़ार में नहीं बैठता। जयशंकर ने दो टूक कहा, यह सीमाएँ नहीं मानता, यह प्रणालियों को ध्वस्त कर देता है। मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य ही असली सुरक्षा है।

हम आपको बता दें कि भारत ने इस मंच से ग्लोबल साउथ की आवाज़ बुलंद की। जयशंकर ने कहा कि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अनेक देशों के सामने कमजोर स्वास्थ्य तंत्र, सीमित लैब क्षमताएँ, धीमी प्रतिक्रिया प्रणाली और दवाओं तक असमान पहुँच जैसी गंभीर चुनौतियाँ हैं। ये सिर्फ विकास संबंधी कमियाँ नहीं, बल्कि वैश्विक जोखिम हैं। उन्होंने साफ कहा, ग्लोबल साउथ न केवल सबसे अधिक असुरक्षित है, बल्कि सबसे अधिक योगदान देने की क्षमता भी उसी में है। आने वाले 50 वर्षों को आकार देने का हक भी उसी का होना चाहिए। जयशंकर ने भारत की क्षमताओं को तथ्यों के साथ सामने रखते हुए कहा, दुनिया के 60त्न वैज़्सीन भारत बनाता है, 20त्न जेनेरिक दवाएँ भारत

से जाती हैं, अफ्रीका में 60त्न दवाएँ भारत से जाती हैं, 2014 में सिर्फ 50 से बढ़कर 11,000 बायोटेक स्टार्टअप हमारे यहां हो गये हैं, हमारे यहां उन्नत BSL-3 और BSL--4 लैब नेटवर्क है और डिजिटल हेल्थ में तेज़ी से विस्तार हो रहा है। उन्होंने बताया कि COVID-19 के दौरान भारत ने Vaccine Maitri के तहत 100 से अधिक देशों को लगभग 300 मिलियन डोज़ भेजीं जिनमें कई बिल्कुल मुज़्त थीं।विदेश मंत्री ने BWC की कमज़ोरियों पर भी खुलकर उंगली उठाई।

उन्होंने कहा, न कोई कॉज़्प्लायंस सिस्टम, न कोई स्थायी तकनीकी निकाय, न विज्ञान-तकनीक की प्रगति पर निगरानी तंत्र। उन्होंने कहा कि गैर-राज्य तत्वों द्वारा जैविक हथियारों का दुरुपयोग अब दूर की आशंका नहीं, बल्कि एक वास्तविक खतरा है। उन्होंने आधुनिक समय के अनुरूप सत्यापन और अनुपालन को अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि भारत ने एक National Implementation Frame-work का सुझाव दिया है, जिसमें हाई-रिस्क एजेंटों की पहचान, डुअल-यूज़ रिसर्च की निगरानी, घटना प्रबंधन और निरंतर प्रशिक्षण शामिल हैं।

जयशंकर ने दोहराया कि भारत न केवल BWC और CWC का जिज़्मेदार सदस्य है, बल्कि वस्सनार अरेंजमेंट, रूझष्टक्र और ऑस्ट्रेलिया ग्रुप जैसे प्रमुख निर्यात नियंत्रण ढाँचों में सक्रिय है। भारत अपने अनुभव को दुनिया विशेषकर ग्लोबल साउथ, के साथ साझा कर रहा है, जिसमें ह्रस्ष्ट 1540 पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी शामिल है। अंत में उन्होंने दुनिया को याद दिलाया कि मानवता ने 50 साल पहले एक फैसला किया था कि बीमारी को हथियार नहीं बनने देंगे। अब समय उस संकल्प को नया जीवन देने का है।

देखा जाये तो डॉ. एस. जयशंकर का भाषण एक कठोर चेतावनी और नैतिक चुनौती दोनों है। BWC की 50वीं वर्षगांठ आत्मसंतोष का अवसर नहीं, बल्कि इस कड़वे सच को स्वीकार करने का क्षण है कि आज जैविक खतरे कहीं अधिक तेज़, सस्ते और अनियंत्रित हो चुके हैं। दुनिया की मौजूदा शक्ति संरचना, खासकर विकसित देशों की भूमिका, अब संदेह के घेरे में है। उन्होंने जैव सुरक्षा के ढाँचों को मजबूत करने से ज़्यादा अपने-अपने हितों को तरजीह दी है। परिणाम सामने है— क्ख्रङ्खष्ट एक ऐसा समझौता बन चुका है जिसके पास दाँत ही नहीं हैं।

जयशंकर का यह कहना बिल्कुल सही है कि सुरक्षा की असमानता, खतरे की समानता को जन्म देती है। ग्लोबल साउथ सिर्फ पीड़ित नहीं, उसे भविष्य के नियम बनाने में बराबर की आवाज़ मिलनी चाहिए। भारत ने न सिर्फ क्षमता दिखाई है, बल्कि संकट में दुनिया की मदद कर यह सिद्ध किया है कि नेतृत्व केवल संसाधनों से नहीं, इरादों से आता है। अब सवाल दुनिया के सामने है- ज़्या हम जैविक सुरक्षा को नई परमाणु बहस बनने देंगे जहाँ नियम पुरातन और खतरे आधुनिक हों? या अगले 50 साल एक सुरक्षित, वैज्ञानिक और न्यायपूर्ण ढाँचे के साथ शुरू करेंगे? भारत ने तो अपना रुख साफ कर दिया है। अब विश्व समुदाय की परीक्षा है।

प्रियंका गांधी का केंद्र पर हमला-अगर एक भी मुद्दा नहीं सुनेंगे, तो सदन का ज़्या मतलब?

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने सोमवार को संसद के चल रहे शीतकालीन सत्र को लेकर केंद्र सरकार की तीखी आलोचना की और उस पर सदन में सभी सार्थक चर्चाओं से बचने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि अगर सरकार विपक्ष द्वारा उठाए गए एक भी मुद्दे पर बातचीत करने से इनकार कर दे, तो संसद कैसे चलेगी। पत्रकारों से बात करते हुए, कांग्रेस सांसद ने कहा कि सरकार किसी भी मुद्दे पर चर्चा नहीं चाहती। फिर सदन कैसे चलेगा? उन्हें कम से कम हमारी एक बात तो सुननी चाहिए। अगर सर पर नहीं, तो चुनाव सुधारों या किसी अन्य संबंधित मुद्दे पर चर्चा की जा सकती है। अगर वे किसी मुद्दे पर चर्चा नहीं करेंगे, तो सदन कैसे चलेगा? वाड्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस टिप्पणी पर भी निशाना साधा, जिसमें उन्होंने सभी को मौसम का आनंद लेने की सलाह दी थी। दिल्ली में बिगड़ते प्रदूषण का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सभी से मौसम का आनंद लेने को भी कहा। दिल्लीवासियों को किस मौसम का आनंद लेना चाहिए? उन्हें थोड़ा बाहर झाँककर देखना चाहिए कि देश में ज़्या हो रहा है। इस बीच, संसद के निचले सदन, लोकसभा की कार्यवाही सोमवार को दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई और अब मंगलवार (2 दिसंबर) सुबह 11 बजे बैठक होगी।

संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन बार-बार नारेबाजी हुई, सज़ा पक्ष ने आरोप लगाया कि विपक्षी सांसद सदन को चलने नहीं दे रहे हैं। सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे के बीच सदन की कार्यवाही कुल तीन बार स्थगित हुई और लगभग 50 मिनट का ही विधायी कार्य हुआ। केंद्रीय विज़ मंत्री निर्मला सीतारमण ने मणिपुर वस्तु एवं सेवा कर (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 2025 को विचार और पारित करने के लिए सदन में पेश किया। केंद्रीय विज़ मंत्री ने बार-बार हो रही नारेबाजी के बीच सदन में कहा कि केंद्र सरकार ने 2017 के केंद्रीय वस्तु एवं सेवा अधिनियम, विशेष रूप से विज़ अधिनियम 2025 की धारा 121 से 134 में संशोधन किया है। इसे संसद द्वारा पारित किया गया और 2024 में अधिनियमित किया गया। आधे से ज़्यादा राज्यों द्वारा अपने जीएसटी को अद्यतन करने के बाद ये परिवर्तन अज़्टूबर 2025 से लागू भी हो गए।

नगालैंड की परंपराएं भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत करती हैं : अमित शाह

नगालैंड ०१/१२ (संवाददाता): केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को नगालैंड के लोगों को राज्य स्थापना दिवस पर बधाई दी और कहा कि पूर्वोज़र राज्य की जीवंत परंपराएं और वहां के लोगों की जुझारू भावना राष्ट्र के सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत करती है।

नगालैंड का गठन एक दिसंबर, 1963 को भारत के 16वें राज्य के रूप में किया गया था। तब से एक दिसंबर को प्रतिवर्ष नगालैंड राज्य स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।गृह मंत्री शाह ने एज़्स पर एक पोस्ट में कहा, नगालैंड की बहनों और भाइयों को उनके राज्य स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं। राज्य की जीवंत परंपराएं और इसके लोगों की जुझारू भावना हमारे राष्ट्र के सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूती प्रदान करती है। कामना है कि नगालैंड शांति, प्रगति और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़े।

कांग्रेस ने सरदार पटेल को इतिहास से मिटाने का बहुत प्रयास किया-नड्डा

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने शनिवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस ने सरदार पटेल को इतिहास से मिटाने का बहुत प्रयास किया और यहां तक कि पार्टी ने नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा सरदार पटेल के स्मारक के रूप में निर्मित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' की लागत और आवश्यकता पर भी सवाल उठाया।

नड्डा ने यहां अटलदरा गांव में 'सरदार एट द रेट ऑफ150 यूनिटी मार्च' के दौरान एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस नहीं चाहती थी कि सरदार पटेल को याद किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी नीतियों से कश्मीर मुद्दे को बिगड़ने दिया, जबकि सरदार पटेल ने आजादी के बाद 562 रियासतों का सफलता पूर्वक देश में विलय किया। नड्डा ने आरोप लगाया, ''कांग्रेस ने एक षड्यंत्र के तहत जानबूझकर सरदार पटेल को इतिहास से मिटाने की बहुत कोशिश की। वे चाहते थे कि उनका नाम गायब हो जाए ताकि उन्हें याद न रखा जाए। लंबे समय तक, कांग्रेस ने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि भारत के लौह पुरुष का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज न हो। नड्डा ने कहा कि सरदार पटेल का निधन 1950 में हुआ था, लेकिन उन्हें 1991 में 'भारत रत्न' से सज़्मानित किया गया। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री मोदी ने सरदार पटेल को सच्चे अर्थों में याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। लेकिन, जब मोदी ने पटेल को श्रद्धांजलि स्वरूप गुजरात के नर्मदा जिले में दुनिया की सबसे ऊंची 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' बनाने का फैसला किया, तो कांग्रेस ने इसकी लागत पर सवाल उठाए। नड्डा ने कहा, ''कांग्रेस ने पूछा कि इतना पैसा ज़्यों खर्च किया जा रहा है। और जब सरदार पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा स्थापित की गई, तो कांग्रेस के सदस्यों ने सवाल उठाया कि इससे ज़्या हासिल होगा। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों का एकीकरण किया था, जबकि तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने कहा था कि वह जज़्मू-कश्मीर पर फैसला लेंगे।

श्रीलंका में 46 लोगों की मौत पर मोदी ने व्यक्त की संवेदना, भारत भेजेगा राहत सामग्री

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चक्रवात दित्वा में मारे गए लोगों के प्रति श्रीलंका के प्रति संवेदना व्यक्त की और प्रभावित परिवारों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि भारत ने ऑपरेशन सागर बंधु के तहत तत्काल राहत भेजी है और आगे भी सहायता प्रदान करने के लिए तैयार है। भारतीय मौसम विभाग ने शुक्रवार को बताया कि चक्रवाती तूफान दित्वा इस समय श्रीलंका के तटीय क्षेत्र और उससे सटे दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजर रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (ढ्ढरूष्ठ) के अनुसार, यह उज़र-उज़र-पश्चिम की ओर बढ़ रहा है और 30 नवंबर की सुबह तक तमिलनाडु और दक्षिणी आंध्र प्रदेश के तटों के करीब पहुँचने की उज़्मीद है। 28 नवंबर को सुबह 8:30 बजे (भारतीय समयानुसार) यह तूफ़ान 8.3ए उज़र और 81.0ए पूर्व के बीच त्रिंकोमाली से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम और श्रीलंका में बट्टिकलोआ से 100 किलोमीटर उज़र-पश्चिम में स्थित था। भारत की ओर, यह कराईकल से 320 किलोमीटर

दक्षिण-दक्षिणपूर्व, पुडुचेरी से 430 किलोमीटर दक्षिण-दक्षिणपूर्व और चेन्नई से 530 किलोमीटर दक्षिण में था।

तूफ़ान के आगे बढ़ने को देखते हुए, मौसम विभाग ने पूरे तमिलनाडु में अलर्ट जारी कर दिया है। क्षेत्रीय मौसम विभाग ने तंजावुर, तिरुवरुर, नागपट्टिनम और मयिलादुथुराई सहित कावेरी डेल्टा के कुछ ज़िलों में 30 नवंबर तक रेड अलर्ट जारी किया है। चक्रवाती तूफ़ान के नज़दीक आने पर पुडुचेरी बंदरगाह पर चक्रवात चेतावनी संकेत संज़्या 2 फहराया गया। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, समुद्र की स्थिति अभी भी खराब बनी हुई है, तट पर तेज़ लहरें और तेज़ हवाएँ चल रही हैं। उज़री तमिलनाडु और पुडुचेरी तथा उससे सटे दक्षिणी आंध्र प्रदेश के तटों के लिए चक्रवात की चेतावनी जारी की गई है। अधिकारियों ने तटीय निवासियों को सतर्क रहने की सलाह दी है ज़्योंकि यह तूफ़ान तेज़ होकर भारतीय तटरेखा के पास पहुँच रहा है।

रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, चक्रवात के लगातार तेज़ होने के कारण कम से कम 46 लोगों की मौत हो गई है और 23 अन्य लापता हैं। मौसम विभाग ने शुक्रवार को चेतावनी दी थी कि अगले 12 घंटों में द्वीप पर आगे बढ़ने के साथ ही यह तूफ़ान और भी तेज़ हो सकता है। आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने एक बयान में कहा कि देश भर में 43,991 लोगों को स्कूलों और अन्य सार्वजनिक आश्रय स्थलों में पहुँचाया गया है। देश भर में स्कूल बंद रहे, रेल सेवाएँ निलंबित रहीं और कोलंबो स्टॉक एज़्सचेंज ने समय से पहले कारोबार बंद करने की घोषणा की।

4-5 दिसंबर को भारत में रहेंगे पुतिन, दोस्त मोदी के साथ बनाएंगे खास रणनीति

नयी दिल्ली ०१/१२ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 4-5 दिसंबर 2025 को भारत की राजकीय यात्रा करेंगे। इस दौरान वह 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सज़्मेलन में भाग लेंगे। यात्रा के दौरान राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री मोदी द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। साथ ही दोनों नेता 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' को और मजबूत करने की रूपरेखा तय करेंगे तथा क्षेत्रीय-वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करेंगे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी पुतिन का स्वागत करेंगी और उनके सज़्मान में भोज का आयोजन करेंगी।

हम आपको बता दें कि रक्षा सहयोग इस शिखर वार्ता का मुज़्य केंद्र रहने वाला है। भारत द्वारा पाँच और स्-400 ट्रायंफ वायु-रक्षा स्क्वाड्रन खरीदने की योजना तथा पहले से तैनात स्-400 प्रणालियों के लिए बड़ी संज़्या में सतह-से-वायु मिसाइलों की खरीद से जुड़े मुद्दे इन वार्ताओं में प्रमुख रूप से शामिल होंगे। हालाँकि, भारतीय वायुसेना द्वारा दो-तीन स्क्वाड्रन रूसी सु-57 पाँचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान लेने पर अभी निर्णय लंबित हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली कैबिनेट सुरक्षा समिति पहले बैच के 84 सु-30स्रद्मढ्ढ विमानों के 63,000 करोड़ रुपये के आधुनिकीकरण को मंजूरी देने वाली है। यह उन्नयन भारत में ही होगा, किंतु रूस इसमें तकनीकी सहयोग देगा। आधुनिकीकरण के बाद ये विमान आने वाले 30 वर्षों तक उन्नत हवाई युद्ध क्षमता से लैस रहेंगे। रक्षा खरीद में भारत को रूस और अमेरिका दोनों के साथ संतुलन साधना पड़ रहा है। अमेरिका, पिछले 15 वर्षों में भारत को 26 अरब डॉलर के रक्षा उपकरण बेच चुका है। इसके अलावा, हाल ही में 113 त्नश्व-स्न404 इंजन की खरीद और नौसेना के लिए रू॥-60क्र हेलीकॉप्टरों के फॉलो-ऑन सपोर्ट पैकेज को भी मंजूरी दी गयी है।

वहीं, रूसी पक्ष ने आश्वासन दिया है कि 2018 में खरीदे गए पाँच स्-400 स्क्वाड्रनों में से शेष दो स्क्वाड्रन नवंबर 2026 तक भारत को दे दिए जाएँगे, जो यूक्रेन युद्ध के कारण विलंबित थे। भारत ने लगभग 10,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त स्-400 मिसाइलों की खरीद को मंजूरी दे दी है, जिनकी मारक क्षमता 120 से 380 किमी तक है। ये मिसाइलें पाकिस्तान के साथ हालिया तनाव में उपयोग किए गए मौजूदा भंडार की पूर्ति तथा भविष्य की रणनीतिक तैयारी के लिए खरीदी जा रही हैं। भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ़ मार्शल ए.पी. सिंह ने स्-400 को 'गेमचेंजर' बताते हुए कहा है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इस प्रणाली ने स्न-16 और छ्वस्न-17 श्रेणी के कम से कम पाँच पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों को 314 किमी की दूरी से मार गिराया, जो अब तक की रिकॉर्ड 'लॉन्गेस्ट किल' है।

देखा जाये तो रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की यह भारत यात्रा ऐसे समय हो रही है, जब वैश्विक भू-राजनीति में तेज़ी से बदलाव आ रहे हैं। अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा अपने चरम पर है, यूक्रेन युद्ध ने यूरोप की सुरक्षा संरचना को अस्थिर कर दिया है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सामरिक तनाव नई ऊँचाइयों पर पहुँचा है। ऐसे में भारत-रूस वार्षिक शिखर सज़्मेलन का न केवल द्विपक्षीय, बल्कि वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भी बड़ा महत्व है। हम आपको बता दें कि भारत की विदेश नीति का केंद्रीय सिद्धांत 'रणनीतिक स्वायज़्ता' है यानि न तो पूर्ण अमेरिकी धुरी, न ही किसी एक शक्ति पर निर्भरता। रूस दशकों से भारत का विश्वसनीय रक्षा साझेदार रहा है। भारत के लगभग 60क्व70त्न सैन्य प्लेटफॉर्म रूसी मूल के हैं। इसलिए स्-400, सु-30स्रद्मढ्ढ अपग्रेड, मिसाइल तकनीक, पनडुज़्बी सहयोग, और अंतरिक्ष साझेदारी जैसे क्षेत्रों में रूस से सहयोग भारत की सुरक्षा रणनीति की रीढ़ बने हुए हैं।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

हॉस्पिटल मैनेजमेंट का कोर्स कर कॅरियर को दें नई उड़ान

हॉस्पिटल मैनेजमेंट को हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेशन और हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन के तौर पर भी जाना जाता है। इसका काम हॉस्पिटल में सभी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलवाना है। इस कोर्स को करने के लिए स्टूडेंट का 12वीं कक्षा साइंस स्ट्रीम के साथ पास होना जरूरी है।

कोरोना महामारी के बाद हेल्थ सेक्टर में कई बड़े बदलाव हुए हैं। साथ ही कॅरियर के तौर पर भी कई ऑप्शन सामने आए हैं। बता दें कि पहले नर्सिंग और एमबीबीएस कर मेडिकल सेक्टर में कॅरियर बनाया जा सकता था। लेकिन अब इस सेक्टर में मेडिकल की डिग्री के बिना भी आप अपना कॅरियर बना सकते हैं। इन्हीं में से एक कॅरियर ऑप्शन हॉस्पिटल मैनेजमेंट का है। हॉस्पिटल मैनेजमेंट को हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेशन और हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन के तौर पर भी जाना जाता है। इस सेक्टर से जुड़े लोगों के अनुसार, स्वास्थ्य संबंधित सेवाओं के विस्तार के अलावा हॉस्पिटल मैनेजमेंट के क्षेत्र में भी काम बढ़ रहा है। आइए जानते हैं आप कैसे इस सेक्टर में अपना कॅरियर शुरू कर सकते हैं।

जानिए क्या है हॉस्पिटल मैनेजमेंट

हॉस्पिटल मैनेजमेंट हेल्थ केयर एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट के क्षेत्र में आता है। इसका काम हॉस्पिटल में सभी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलवाना है। इसके अलावा इसका काम यह सुनिश्चित करना है कि हॉस्पिटल आने वाले मरीजों और वहां काम करने वाले कर्मचारियों को किसी तरह की कोई समस्या ना हो। हॉस्पिटल मैनेजमेंट टीम इन व्यवस्थाओं को सुनियोजित करने का काम भी करती है।

अहम है यह फील्ड

हॉस्पिटल मैनेजमेंट के तहत हॉस्पिटल में चलने वाली कैंटीन से लेकर लिफ्ट तक का कार्यभार ही आता है। किसी भी संचालन में कमी और अस्पताल में होने वाले हादसों की जिम्मेदारी भी हॉस्पिटल मैनेजमेंट की होती है। एक सर्वे के मुताबिक भारत में साल 2025 तक 10 लाख से ज्यादा हॉस्पिटल मैनेजर्स की जरूरत होगी।

हॉस्पिटल मैनेजमेंट कोर्स

कई संस्थान हॉस्पिटल मैनेजमेंट में बैचलर की डिग्री देते हैं। यह कोर्स 3 साल का होता है। इसके अलावा आप इसमें प्रोफेशनल कोर्स में मास्टर्स डिग्री भी प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान समय में हॉस्पिटल मैनेजमेंट के कोर्स में एमबीए वालों को प्राथमिकता दी जा रही है। वहीं प्राइवेट संस्थान हॉस्पिटल मैनेजमेंट कोर्स डिप्लोमा सर्टिफिकेट भी देते हैं।

क्वालिफिकेशन

हॉस्पिटल मैनेजमेंट कोर्स करने के लिए स्टूडेंट का 12वीं कक्षा साइंस स्ट्रीम के साथ पास होना आवश्यक होता है। यह कोर्स करने के लिए छात्र के 12वीं में बायोलॉजी में न्यूनतम 50% अंक होने जरूरी है। कुछ शैक्षणिक संस्थान इंटरव्यू और टेस्ट के आधार पर भी इस कोर्स में दाखिला देते हैं।

सैलरी

हॉस्पिटल मैनेजमेंट कोर्स करने के बाद उम्मीदवार 40 से 50 हजार रुपये प्रतिमाह कमाने का मौका मिलता है। इसके अलावा सरकारी संस्थान में एक से डेढ़ लाख रुपए महीने की सैलरी उठा सकते हैं। समय और अनुभव बढ़ने के साथ ही सैलरी में भी बढ़ोतरी होती जाएगी।

क्या आप ओलंपियाड में सफलता चाहते हैं

सुनहरे कल की ओर बढ़ने के लिए आपके लिए यह जरूरी है कि आज आप अपने को सुव्यवस्थित करें। पढ़ाई के प्रति गंभीर हर छात्र अपनी अकादमिक सफलता का सपना देखता है और इस सपने को साकार करने के लिए यह जानना जरूरी है कि सफलता के मार्ग पर कैसे बढ़ें और कैसे एक सफल रणनीति बनाएं। यदि आप ओलंपियाड में महत्वाकांक्षी सफलता चाहते हैं, आपके लिए रणनीतिक योजना बनाना जरूरी हो जाता है।

किसी योजना के बिना लक्ष्य केवल इच्छा मात्र है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, ओलंपियाड, जैसे साइंस ओलंपियाड, मैथेमेटिकल ओलंपियाड या अस्ट्रोनोमी ओलंपियाड, छात्रों के लिए भारत और विदेशों में होने वाली चुनौतीपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए खुद को तैयार करने के लिए सीखने के बहुत ही बेहतरीन अवसर हैं। ये परीक्षाएं न केवल छात्र के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करती हैं, बल्कि उन्हें अपनी खुद की क्षमता को चुनौती देने और आत्म-मूल्यांकन करने और परिपक्व होने में भी मदद करती हैं। लगभग हर छात्र अपने स्कूल में कम से कम एक ओलंपियाड में हिस्सा अवश्य लेता है लेकिन ओलंपियाड में हिस्सा लेना अंधेरे में तीर चलाने की तरह नहीं होना चाहिए। कोई भी प्रतिस्पर्धी / शैक्षिक परीक्षा में सफल होने के लिए आपको सही रणनीति, विधियत दृष्टिकोण, समर्पण और रूख अपनाना चाहिए। यहां उन बिंदुओं की सूची दी गई है जो आपको ओलंपियाड के लिए अच्छी तरह से तैयार करने में मदद करेंगे और आप अपने इस रास्ते में किसी भी बड़ी बाधा का सामना किए बिना आपके निर्धारित लक्ष्य को हासिल करके विजेता के रूप में उभरेंगे।

तैयारी की शुरूआत जल्द करें

किसी कार्य की शुरूआत करने का कोई खास दिन नहीं होता है। आज से आप शुरूआत कर सकते है–जैसे ही आप अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेते है, आप अपने लक्ष्य को पार करने के प्रति अपने को अनुकूल बनाने लगते हैं। आप केवल अपनी तैयारी थोड़ा पहले शुरू करें। जल्द तैयारी शुरू करना केवल ओलंपियाड में सफल होने की कुंजी नहीं है, बल्कि हर प्रतिस्पर्धी/शैक्षिक परीक्षा में उत्कृष्टता हासिल करने की कुंजी है। अगर आप जल्द तैयारी शुरू करते है तो आप सही समय पर अपनी तैयारी पूरी कर लेंगे और आप समय से पहले नहीं थकेंगे। आप अपने को भरपूर समय दें, अपनी प्रगति को देखें तथा अपने लक्ष्य पर नजर रखें। याद रखें कि दुनिया भर में लाखों छात्र ओलंपियाड देते हैं। यह इस बात का संकेत है कि आप जिन सवालों को लेकर अभ्यस्त हैं उनसे कहीं कठिन सवाल इसमें पूछे जाने वाले हैं। इसलिए आपको हर कंसेप्ट को पूरी तरह से समझने के लिए समय चाहिए।

सही दृष्टिकोण अपनाएं

अपने जीवन में अपनी सबसे बड़ी क्षमता प्राप्त करने की दिशा में आप जो सबसे महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं उनमें से एक है सकारात्मक दृष्टिकोण हासिल करने के बारे में सीखना। सकारात्मक दृष्टिकोण का असर आपके प्रदर्शन और आपके आसपास की हर चीज पर पड़ता है। इसलिए आप इससे पहले की अकादमिक उत्कृष्टता की ओर बढ़ें, आपके लिए दृष्टिकोण को सही तरीके से प्राप्त करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। लक्ष्य की ओर एक आशावादी दृष्टिकोण अपनाने से आपको सही उत्साह और जुनून के साथ मार्ग में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

अपने पाठ्यक्रम को जानें

आप अपने क्लास नोट्स तथा एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को पूरी तरह से पढ़ें। आप अपने बेसिक को मजबूत करें। यदि आप कंसेप्ट्स को अच्छी तरह से जानते हैं, तो आप किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं, यहां तक कि घुमाकर पूछे जाने वाले मुश्किल सवाल का जवाब भी बता सकते हैं। विज्ञान और गणित जैसे विषयों में आपको अपनी नींव मजबूत बनानी चाहिए। तैयारी करने की युक्तियों को तर्कसंगत बनाने के लिए, परीक्षा के पाठ्यक्रम और पैटर्न को अच्छी तरह से जानना जरूरी है। सुनिश्चित करें कि आप जिस कठिनाई के स्तर वाली सामग्रियों / विषयों से अवगत हुए हैं वे वास्तविक परीक्षा के साथ भी जुड़े हैं।

ओलंपियाड के लिए सही अध्ययन सामग्रियां खोजने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें

पाठ्यक्रम और सैम्पल पेपर डाउनलोड करें

इंटरनेट पर कई विश्वसनीय वेबसाइट या ऑनलाइन रिसोर्स हैं जहां से आप परीक्षा के विभिन्न सैम्पल पेपर डाउनलोड कर सकते हैं जो आपको अपनी तैयारी को मापने और परीक्षा का सही रूझान हासिल करने में मदद करेंगे।

मॉक टेस्ट लें

अगर आप मॉक टेस्ट लेते हैं तो इससे आपको कमजोर विषयों का पता लगाने तथा उन विषयों में और तैयारी करने में मदद मिलेगी। यह आपको ओलंपियाड तैयारी के लिए आवश्यक समय निर्धारित करने में मदद करेगा।

गाइड करने वाले सही सलाहकार खोजें

आज के गलाकाट प्रतिस्पर्धी माहौल में, आपके पास एक सही सलाहकार होना आवश्यक है जो आपका मार्गदर्शन कर सके और आपको अंतिम सफलता की ओर अग्रसर करते हुए आपकी पढ़ाई पर भी नजर रख सके। एक अच्छा सलाहकार आपको विशिष्ट कौशल और ज्ञान सीखने और विकसित करने में मदद करेगा। तो, आप एक ऐसा शिक्षक ढूंढें जो अच्छा हो और जो आपके वर्तमान स्तर और वांछित स्तर के बीच के अंतर को जान सके और आपको अपने सपनों के लक्ष्य की ओर बढ़ता देख सके।

अपने शेड्यूल का पालन करें और अपनी तैयारी रणनीति की निगरानी करें

यह वह समय है जब आपने अपने लिए एक रणनीति या शेड्यूल तैयार किया होता है। आप उस शेड्यूल का पालन करें और इससे दूर होने से बचें। सफलता के लिए आपके दृढ़ संकल्प की जरूरत होती है। दृढ़ रहें और अपने शेड्यूल का पालन करते हुए परीक्षा के दिन अधिक से अधिक बेहतर प्रदर्शन करें। एक बार जब आप तैयारी पथ पर चलना शुरू कर देते है, तो अपनी प्रगति की निगरानी करना न भूलें। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप सही दिशा में जा रहे हैं इसके लिए आप आपने कौशल एवं ज्ञान का नियमित तौर पर परीक्षण करें।

अपने स्वास्थ्य पर नजर रखें

काम ही काम, न कोई मोद न आराम, फिर कैसे चमके चिपटू राम। यह एक पुरानी कहावत हो सकती है लेकिन आज भी यह कहावत काम लायक है। उत्कृष्टता हासिल करने के प्रयास में, आपको अपने स्वास्थ्य की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। आप ऐसा कठोर शेड्यूल नहीं बनाए कि आपका स्वास्थ्य ही प्रभावित होने लगे। रोजाना समुचित व्यायाम करें, स्वास्थवर्द्धक आहार लें और छोटा ब्रेक लें।

ओलंपियाड के लिए त्वरित टिप्स और ट्रिक्स

सीखने के लिए सबसे बढ़िया दृष्टिकोण अपनाएं। निर्धारित पुस्तकों को पढ़े तथा चरणबद्ध तरीके से सभी क्षेत्रों में अच्छी तरह से महारत हासिल करें। ओलंपियाड पर ऑनलाइन मंच / चैट पर बहुत अधिक समय व्यतीत करने से बचें, क्योंकि वे कभी-कभी अप्रासंगिक हो सकते हैं। ओलंपियाड प्रैक्टिस पेपर और ओलंपियाड सैम्पल पेपर के महत्व को कभी भी कम करके नहीं आंके। ये ओलंपियाड तैयारी के लिए अंतिम गाइडपोस्ट हैं। इनका नियमित तौर पर प्रैक्टिस करें तथा हर बार अपने स्कोर में सुधार करने की कोशिश करें। प्रतिशत स्कोर आपको यह पता लगाने में मदद करता है कि आप फोरम में दूसरों की तुलना में कहां खड़े हैं, इसलिए, उन्हें गंभीरता से लें और धीरे-धीरे अपना रास्ता तैयार करें लेकिन निश्चित रूप से सफलता की दिशा में।

परीक्षा पैटर्न – सही परिप्रेक्ष्य में इसे जानें

ओलंपियाड अलग-अलग के बजाय निर्धारित पैटर्न का पालन करता है और इसमें निश्चित संख्या में सवाल होते हैं जैसा कि पहले ही प्रासंगिक वेब साइट / वीडियो सर्कुलर के जरिए घोषित किया जा चुका है। प्रथम स्तर की परीक्षा में आपके प्रदर्शन के आधार पर, आपको रैंक दिया जाता है। यह रैंक निर्धारित करता है कि आप दूसरी स्तर की परीक्षा के लिए अर्हता प्राप्त करते हैं या नहीं। प्रथम स्तर की परीक्षा में भाग लेने वाले छात्रों के कक्षा बार प्रथम पूर्व निर्धारित प्रतिशत तथा राज्य वार शीर्ष निर्धारित निर्दिष्ट रैंक धारकों को अगले स्तर के लिए अर्हता प्राप्त होती है। परीक्षा पैटर्न के बारे में ज्ञान रखने से आपको सही स्वभाव में मदद मिलेगी। आप सफलता हासिल करेंगे या नहीं, सब कुछ आप पर निर्भर है। इसलिए आप धैर्य रखें और आत्मविश्वास रखें। आप आसानी से सफलता हासिल कर सकेंगे। जब ओलंपियाड में सफलता की बात आती है, तो यह आपको सीखने और अभ्यास के प्रति केंद्रित दृष्टिकोण के साथ अभ्यास और स्मार्ट तरीके से काम करना जरूरी है। जब आप ओलंपियाड के लिए तैयारी कर रहे होते है तो खुद को ओवरस्ट्रेस न करें। बस अपने प्रयासों को सही दिशा में रखें और आप सफल होने के लिए निश्चित रहेंगे।

ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग करियर को दें रफ्तार

भारतीयों की क्रय शक्ति और गाड़ियों की सेल्स बढ़ने से ऑटोमोबाइल सेक्टर तेजी से उभरती हुई इंडस्ट्री बन गया है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर ऑटो सेक्टर सबसे ज्यादा लोगों को रोजगार देता है। कहते हैं कि किसी भी ऑटो कंपनी में एक जॉब क्रिएट होने का मतलब है, तीन से पांच इनडायरेक्ट जॉब ऑपर्चुनिटी का खुलना। जिस तरह से मार्केट में देशी-विदेशी कंपनियों की नई इनोवेटिव कारें लॉन्च हो रही हैं, उसे देखते हुए ऑटोमोबाइल इंजीनियर्स की मांग तेजी से बढ़ रही है। अगर आपको भी कार का पैशन है। मैकेनिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और मैथमेटिक्स में दिलचस्पी है, तो ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के साथ करियर को रफ्तार दे सकते हैं।

अगर आप इनोवेटिव और क्रिएटिव माइंडेड हैं, तो ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का करियर अपना सकते हैं। इस फील्ड में शानदार पे-पैकेज के अलावा, जॉब की भरपूर संभावनाएं हैं।

एक ऑटोमोबाइल इंजीनियर पर कई प्रकार की जिम्मेदारियां होती हैं। उन्हें कम लागत में बेहतरीन ऑटोमोबाइल डिजाइन करना होता है। इसलिए इंजीनियर्स को सिस्टम और मशीनों से संबंधित रिसर्च और डिजाइनिंग में काफी समय देना पड़ता है। पहले ड्रॉइंग और ब्लूप्रिंट तैयार किया जाता है। इसके बाद इंजीनियर्स उनमें फिजिकल और मैथमेटिकल प्रिंसिपल्स अप्लाई कर उसे डेवलप करते हैं। इस तरह ऑटोमोबाइल इंजीनियर्स प्लानिंग, रिसर्च वर्क के बाद एक फाइनल प्रोडक्ट तैयार करते हैं, जिसे मैन्युफैक्चरिंग के लिए भेजा जाता है। यहां भी उन्हें पूरी निगरानी रखनी होती है। व्हीकल बनने के बाद उसकी टेस्टिंग करना इनकी ही जवाबदेही होती है, जिससे कि मार्केट से कोई शिकायत न आए।

स्पेशलाइजेशन फायदेमंद

अगर कोई ऑटोमोबाइल इंजीनियर किसी खास एरिया में स्पेशलाइजेशन करता है, तो इससे उन्हें काफी फायदा होता है। मार्केट में उनकी एक अलग पहचान बनती है, जैसे–ऑटोमोबाइल इंजीनियर्स एग्जॉस्ट सिस्टम, इंजन और स्ट्रक्चरल डिजाइन में स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं।

बेसिक स्किल्स

ऑटोमोबाइल इंजीनियर बनने के लिए आपके पास टेक्निकल के साथ-साथ फाइनेंशियल नॉलेज होना भी जरूरी है। आपको जॉब के कानूनी पहलुओं से अपडेट रहना होगा। इसके अलावा, इनोवेटिव सोच और स्ट्रॉन्ग कम्युनिकेशन स्किल आगे बढ़ने में मदद करेंगे। इस फील्ड में ड्यूटी ऑवर्स काफी लंबे होते हैं। इसलिए आपको प्रेशर और डेडलाइंस के तहत काम करना आना चाहिए।

एजुकेशनल क्वालिफिकेशन

केमिस्ट्री, मैथ्स, फिजिक्स में दिलचस्पी रखने वाले युवा ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में करियर बना सकते हैं। इसके लिए 10वीं के बाद डिप्लोमा भी किया जा सकता है या फिर आप ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के कोर्स में एडमिशन ले सकते हैं। हां, बीई या बीटेक करने के लिए आपका मैथ्स, फिजिक्स, केमिस्ट्री, कंप्यूटर साइंस जैसे सब्जेक्ट्स के साथ 12वीं होना जरूरी है। आप ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में स्नातक के बाद ऑटोमोटिव्स या ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग में एमई या एमटेक भी कर सकते हैं। अगर विशेषज्ञता हासिल करनी हो, तो पीएचडी भी की जा सकती है। बीई या बीटेक में एंट्री के लिए आईआईटी, जेइइ, एआईईईई, बिटसेट आदि अखिल भारतीय या राज्य स्तर की प्रवेश परीक्षाएं देनी होती हैं।

नौकरी की संभावनाएं

ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में विभिन्न प्रकार की संभावनाएं मौजूद हैं। कार बनाने वाली कंपनी से लेकर सर्विस स्टेशन, इश्योरेंस कंपनीज, ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन में ऑटोमोबाइल इंजीनियर्स के लिए काफी मौके हैं। इसके अलावा, जिस तरह से सड़कों पर गाड़ियों की संख्या बढ़ रही है, उनकी मेंटिनेंस और सर्विसिंग करने वाले प्रोफेशनल्स की मांग में भी बढ़ोतरी हो रही है। आप ऑटोमोबाइल टेक्निशियन, कार या बाइक मैकेनिक्स, डीजल मैकेनिक्स के रूप में काम कर सकते हैं। आप किसी ऑटो कंपनी में सेल्स मैनेजर, ऑटोमोबाइल डिजाइन पेन्ट स्पेशलिस्ट भी बन सकते हैं।

सैलरी पैकेज

एक ग्रेजुएट ऑटोमोबाइल इंजीनियर ट्रेनिंग के समय से ही कमाना शुरू कर देता है। कहने का मतलब यह कि ट्रेनिंग के दौरान कंपनियां उन्हें 15 से 30 हजार रुपये तक का स्टाइपेंड आसानी से दे देती हैं। अगर नौकरी कंफर्म हो गई, तो सैलरी खुद-ब-खुद बढ़ जाती है। वैसे, इंडिया में एक ऑटोमोबाइल इंजीनियर को सालाना 3 से 8 लाख रुपये मिल जाते हैं। सबसे ज्यादा सैलरी व्हीकल मैन्युफैक्चरर देते हैं। इसके बाद प्रोडक्ट डेवलपमेंट और इंजीनियरिंग फर्म्स भी उन्हें अच्छा पे-पैकेज ऑफर करती हैं।

कलिंग समाचार

संपादकीय

मंगलवार 02 दिसंबर 2025

मोदी की नागपुर यात्रा संतुलन की कवायद

अपने प्रधानमंत्रित्व काल के तकरीबन 11 वर्षों के दौरान भारतीय जनता पार्टी को नरेन्द्र मोदी ने इतना मजबूत बना दिया है कि उसके अध्यक्ष जेपी नड्डा को यह कहने में न तो संकोच हुआ और न ही डर लगा कि %अब भाजपा इतनी शक्तिशाली हो चुकी है कि उसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ज़रूरत नहीं रह गयी है%। देश ने अब तक भाजपा के दो ही प्रधानमंत्री देखे हैं– मोदी के अलावा अटल बिहारी वाजपेयी। तीन बार पीएम का पद स हालने वाले वाजपेयी का कार्यकाल हालांकि एक ही बार पूर्णकालिक रहा था (पहले दो बार क्रमशः 13 दिन व 13 माह का)। अटल बिहारी वाजपेयी 2007 में गोलवलकर शताब्दी समारोह में भाग लेने के दौरान संघ मु यालय गए थे, लेकिन तब वह प्रधानमंत्री के पद पर नहीं थे। बतौर प्रधानमंत्री मोदी ने भी 2014 से अब तक यहां आने की कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। 11 सालों बाद 2025 में अब कहीं जाकर मोदी ने रविवार को यहां का दौरा किया। वे भवन में स्थित हेडगेवार स्मृति मंदिर भी गये जहां संघ के संस्थापक हेडगेवार तथा दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर के स्मारक हैं। इससे पहले मोदी 2013 में यहां आये थे, जब वे गुजरात के मु यमंत्री थे। संघ के पदाधिकारी तथा प्रवक्ता इसे गैर राजनीतिक यात्रा बता रहे हैं, लेकिन संघ से वाकई बड़े हो चुके मोदी के यहां आने का मकसद,वह भी इतनी देर से, ढूंढ़ा जा रहा है। पहली बात यह कही जाती है कि नड्डा के उपरोक्त उल्लेखित बयान के कारण भाजपा तथा संघ के बीच रिश्तों में आई दरार को पाटने मोदी यहां आये थे। इतना ही नहीं, यह भी कयास लगाया जा रहा है कि अगले साल बिहार में होने जा रहे चुनाव पर भी चर्चा हुई होगी। कोई कह सकता है कि इस दौरान जब मोदी ने लोकसभा के तीन और न जाने कितने राज्यों के विधानसभा चुनाव जीत लिये तो अब बिहार का चुनाव जीतने हेतु उन्हें संघ प्रमुख से चर्चा करने के लिये क्योंकर आने की आवश्यकता महसूस हुई होगी। बिहार के बारे में पिछले कुछ समय से भाजपा तथा संघ ग भीर हैं। वह इस मायने में कि प्रदेश की भाजपा इकाई ने यह कहकर बिहार जीतने की मंशा जाहिर की है कि, %पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी को सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब यहां भाजपा का मु यमंत्री बने। हाल ही में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने बिहार का पांच दिवसीय दौरा किया था। इन सारी बातों को जोड़कर भी देखा जा रहा है। वैसे नड्डा की बात में दम तो है कि संघ के बिना भाजपा को चुनाव जीतना आता है। वे दिन गये कि संघ के असं य कार्यकर्ता वर्तमान भाजपा और पूर्ववर्ती भारतीय जनसंघ के प्रत्याशियों के लिये चुनावी श्रम करते थे। अब भाजपा कायकर्ताओं के बल पर नहीं वरन केन्द्रीय जांच एजेंसियों– सीबीआई, प्रवर्तन निदेशालय, आयकर आदि के जरिये विपक्ष को खत्म कर, ऑपरशन लोटस, केन्द्रीय निर्वाचन आयोग, ईवीएम, इलेक्टोरल बॉड्स से इकट्ठी धन राशि, समर्थक मीडिया, आईटी सेल आदि के बल पर चुनाव जीतती है। वैसे तो जब सक्रिय राजनीति में शामिल या सत्ता में बैठे लोग आरएसएस से दूरी बनाकर रखते हैं, तो यह संघ के उस विमर्श को बढ़ाने में मददगार साबित होता है जिसमें कहा जाता है कि %संघ एक सांस्कृतिक संगठन है तथा उसका राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है।% हालांकि संघ व भाजपा के अंतर्संबंधों का पर्याप्त खुलासा हो चुका है तथा अब इस बात को बाहरी ही नहीं, खुद दोनों संगठनों के लोग नहीं मानेंगे। बहरहाल, संघ कार्यालय में उन्होंने अपने 34 मिनट के भाषण में संघ की स्वाभाविकता भरपूर तारीफ की। उसे वटवृक्ष बताया तथा कहा कि संघ उनके जैसे लाखों लोगों को देश के लिये जीने की प्रेरणा है। फरवरी में मु बई में हुए भारतीय मराठी साहित्य स मेलन को स बोधित करते हुए तथा हाल ही में प्रसिद्ध अमेरिकी पॉडकास्टर लेक्स फ्रीडमैन के साथ हुई चर्चा में भी मोदी ने संघ की प्रशंसा की थी तथा अपने जीवन पर संगठन के पड़े प्रभाव को बतलाया था। अपने भाषण में मोदी ने देश में हुई विभिन्न त्रासदियों में संघ कार्यकर्ताओं द्वारा पीड़ितों को मदद पहुंचाने का ज़िक्र भी किया।

निर्वासितों से दुर्व्यवहार को सामान्य न बनाएं

लेखा रत्तनानी

छोटे देशों ने बेहतर काम किया है। वे एक अच्छी प्रतिक्रिया के उदाहरण के रूप में सामने आते हैं। कोलंबियाए ब्राजील और मैक्सिको ने अपने देशों में वापस भेजे गए निर्वासितों के साथ दुर्व्यवहार को स्पष्ट रूप से सामने लाया है। दो दक्षिण अमेरिकी देशों और मैक्सिको की गुस्से भरी प्रतिक्रियाएं एक अच्छी और संतुलित प्रतिक्रिया का एक शानदार उदाहरण हैं।

19 फरवरी को यूनाइटेड स्टेट्स व्हाइट हाउस ने 41 सेकंड का एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें निर्वासितों को बेड़ियों में जकड़ा हुआ दिखाया गया है क्योंकि उन्हें अवैध अप्रवासियों को ;जैसा कि उन्हें वहां श्अवैध एलियंसश् के रूप में जाना जाता हैद्ध अमेरिकी क्षेत्र से निकालने के डोनाल्ड ट्रप प्रशासन के प्रयासों के तहत निर्वासन कार्यों के लिए एक हवाई जहाज में ले जाया जा रहा है। वीडियो में निर्वासितों या अमेरिकी अधिकारियों के चेहरे नहीं दिखाए गए थे लेकिन बाद वाले ने जो जैकेट पहनी थी जिससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वे एनफोर्समेंट एंड रिमूवल ऑपरेशंस ;ईआरओद्ध से थेए जो अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन ;आईसीईद्ध के प्रवर्तन और निष्कासन कार्यों का संक्षिप्त रूप है। वीडियो का उद्देश्य न केवल निर्वासितोंए जिनमें से कई भारत से हैंए बल्कि उनके राष्ट्रों और उनके नागरिकों का समग्र रूप से उपहास उड़ाना और उन्हें शर्मिंदा व अपमानित करना था। वीडियो का चौंकाने वाला शीर्षक था. श्एएसएमआररू अवैध विदेशी निर्वासन उड़ानश् और एलोन मस्क के स्वामित्व वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श् एक्सश् पर इसे 100 मिलियन से अधिक बार देखा गया है। वीडियो में एएसएमआर ;ऑटोनॉमस सेंसरी मेरिडियन रिस्पांसद्ध का तात्पर्य स्टील की जंजीरों की झुनझुनी ध्वनि से है जब उन्हें टरमैक पर बिछाया जाता है क्योंकि कैदी आगे बढ़ते हैं और एक.एक करके उन्हें जंजीरों में जकड़ा जाता है। एएसएमआर रीढ़ की हड्डी में महसूस होने वाली संतुष्टि और सुखद झुनझुनी की भावना हैए जो कुछ लोगों में कुछ ध्वनियों से ट्रिगर होती हैए जैसे टिशू पेपर का कुचलना या बबल रैप का फटना। स्टील की बेड़ियों के बिछाए जाने की आवाज वह झुनझुनी है जिसे वे पसंद करते हैं। मस्क ने वीडियो को श्हाहाण्ण्ण् वाहश् शब्दों के साथ रीट्वीट किया।

निर्वासितों के साथ अमानवीय व्यवहार सिर्फ़उनके साथ किए जाने वाले व्यवहार में ही नहीं है। अमेरिकियों के दिमाग में श्एलियंसश् की गहरी पैठ हैए जिसमें कई परतें काम कर रही हैंए जैसे कि श्वेत वर्चस्वए गरीबी का अपराधीकरण और या दुर्व्यवहार का सामान्यीकरण। अमेरिकी राष्ट्रपति के आधिकारिक अकाउंट से ऐसा वीडियो जारी करने और उनके सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंट द्वारा इसे रीट्वीट करने पर हंसने के लिए दिमाग में कुछ गड़बड़ जरूर है। सभी देशों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे निर्वासितों को वापस लौटाएं और अमेरिका को यह बताएं कि निर्वासन ठीक है लेकिन इंसानों के साथ दुर्व्यवहार करनाए जिनमें से ज़्यादातर समाज के गरीब तबके के हैं और जो आजीविका की तलाश में हैंए ऐसी नौकरियां लेना जो इन इच्छुक श्रमिकों की उपलब्धता के बिना भी उपलब्ध हैंए एक फासीवादी शासन के करीब है जो अन्य मनुष्यों को मनुष्य से कमतर समझता है। निर्वासन के लिए लक्षित देशों में सबसे बड़ाए सबसे मजबूत और सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में भारत को यह विरोध अवश्य व्यक्त करना चाहिए। इसमें भारत स्पष्ट रूप सेए बड़े पैमाने पर और बुरी तरह विफल रहा है। इसकी जगह हमारे पास ऐसा नेतृत्व है जो अमेरिका की कार्रवाइयों को उचित ठहराता है। क्या यह पूर्व विदेश सेवा के राजनयिक से राजनेता बने डॉण् एस जयशंकर नहीं थे जिन्होंने 6 फरवरी को एक बयान में कहा था. श्आईसीई द्वारा उपयोग किए जाने वाले विमान द्वारा निर्वासन के लिए मानक संचालन प्रक्रियाए जो 2012 से प्रभावी हैए मैं दोहराता हूंए जो 2012 से प्रभावी हैए प्रतिबंधों के उपयोग का प्रावधान करती है। हालांकिए हमें आईसीई द्वारा सूचित किया गया है कि महिलाओं और बच्चों को नहीं रोका जाता है। इसके अलावा भोजन या अन्य आवश्यकताओं से संबंधित पारगमन के दौरान निर्वासित लोगों की जरूरतों का ध्यान रखा जाता हैए जिनमें संभावित चिकित्सा व आपात स्थिति भी शामिल है। मैं दोहराता हूं कि 5 फरवरी को अमेरिका द्वारा की जाने वाली उड़ान के लिए पिछली प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं किया गया है।श

जयशंकर यह कहने में अधिक उत्सुक हैं कि हमने अपने कार्यकाल के दौरान कुछ नहीं किया। भाजपा के केंद्र में सत्ता में आने के बाद उनके द्वारा किए गए बेतुके, पूरी तरह से बेतुकेए बदसूरतए बेशर्म और खुद को चोट पहुंचाने वाले हैं। पहले और बाद के बीच कृत्रिम विभाजन को देखिए! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को डॉ. जयशंकर को फटकार लगानी चाहिएए अगर नहीं तो पदावनत करना चाहिए क्योंकि उन्होंने इस महत्वपूर्ण मामले में देश को नीचा दिखाया है।

जयशंकर यह कहने में अधिक उत्सुक हैं कि हमने अपने कार्यकाल के दौरान कुछ नहीं किया। भाजपा के केंद्र में सत्ता में आने के बाद उनके द्वारा किए गए बेतुकेए पूरी तरह से बेतुकेए बदसूरतए बेशर्म और खुद को चोट पहुंचाने वाले हैं। पहले और बाद के बीच कृत्रिम विभाजन को देखिए! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को डॉण् जयशंकर को फटकार लगानी चाहिएए अगर नहीं तो पदावनत करना चाहिए क्योंकि उन्होंने इस महत्वपूर्ण मामले में देश को नीचा दिखाया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और राजनीतिक स्पेक्ट्रम के अन्य संगठनों को जयशंकर के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए।

छोटे देशों ने बेहतर काम किया है। वे एक अच्छी प्रतिक्रिया के उदाहरण के रूप में सामने आते हैं। कोलंबियाए ब्राजील और मैक्सिको ने अपने देशों में वापस भेजे गए निर्वासितों के साथ दुर्व्यवहार को स्पष्ट रूप से सामने लाया है।

दो दक्षिण अमेरिकी देशों और मैक्सिको की गुस्से भरी प्रतिक्रियाएं एक अच्छी और संतुलित प्रतिक्रिया का एक शानदार उदाहरण हैं। राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो की एक वाणिज्यिक उड़ान पर कोलंबियाई निर्वासितों को संबोधित करते हुए तस्वीरें हैंए जब उन्होंने निर्वासितों को ले जा रहे अमेरिकी सैन्य कार्गो विमान को अनुमति देने से इनकार कर दिया तो वे सबसे पहले आवाज उठाने वालों में से एक थे। पेट्रो ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश् पर कहा थाए श्मैं कोलंबियाई प्रवासियों को ले जाने वाले अमेरिकी विमानों के हमारे क्षेत्र में प्रवेश देने से इनकार करता हूं। संयुक्त राज्य अमेरिका को प्रवासियों को प्राप्त करने से पहले उनके साथ स मानजनक व्यवहार के लिए एक प्रोटोकॉल स्थापित करना चाहिए।श् कोलंबिया ने निर्वासितों को वापस लाने के लिए अपने देश के विमान भेजे और पेट्रो ने अपने लोगों को स मान के साथ वापस भेजने के लिए राष्ट्रपति के विमान की भी पेशकश की। यह भारतीय प्रतिक्रिया के बिल्कुल विपरीत है।

निर्वासित लोगों के तीन बैचों को हथकड़ियां और पैरों में जंजीरें डालकर अमेरिकी सैन्य कार्गो विमान की घुटन भरी उड़ान द्वारा भारत वापस लाया गया है। 23 फरवरी को भारतीय निर्वासितों का चौथा और नवीनतम बैच दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचा। अमेरिकी सैन्य कार्गो विमानों में हथकड़ी और जंजीरों में बंधे पहले के समूहों के विपरीत 12 लोगों का यह जत्था पनामा से एक वाणिज्यिक उड़ान से वापस आया। वे बेड़ियां खोले हुए थे और उनके पैरों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लगे हुए थे लेकिन निर्वासितों ने तिजुआना शिविर में यातना और कठिनाई के बारे में बताया जहां उन्हें वाणिज्यिक उड़ान से पनामा के लिए रवाना होने से पहले घंटों तक अत्यधिक ठंड में फर्श पर बैठाया गया था। उन्होंने कहा कि कोलंबिया और ब्राजील जैसे देशों ने अपने लोगों के साथ इस तरह के व्यवहार की निंदा की है जबकि भारत चुप रहा है। इससे उनकी समस्याएं और बढ़ गई हैं। ब्राजील के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा है कि वह निर्वासित नागरिकों के साथ श्अपमानजनक व्यवहारश् के बारे में वाशिंगटन से जवाब मांग रहा है। ब्राजील सरकार ने कहा कि वह निर्वासित प्रवासियों के लिए एक स्वागत केंद्र बनाएगी।

इनमें से कोई भी देश अमेरिका की ताकत के आसपास भी नहीं हैए फिर भी उन्होंने यह कहकर अपनी बात रखी हैरू आप हमारे लोगों के साथ बुरा व्यवहार नहीं कर सकते। अगर आप ऐसा करेंगे तो हम चुप नहीं रहेंगे। भारत इससे कुछ सबक सीख सकता है।

सर्वाधिक दुखद तो यह है कि प्रारंभिक जत्थों के बाद मोदी ने अमेरिका का दौरा किया जहां उनकी मुलाकात राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रप से हुई लेकिन उन्होंने इस मुद्दे पर उनसे बात तक नहीं कीए विरोध जतलाना तो दूर की बात है।

जल संकट को कैसे दूर कर सकते हैं?

बाबा मायाराम

हाल के कुछ बरसों से किसानों की एक बड़ी समस्या है बारिश न होना या अनियमित होना। भूजल बरसों में एकत्र होता हैए यही हमारा सुरक्षित जल भंडार है। फिर बिना बिजली के उसे ऊपर खींचना मुश्किल है। पूर्व से आसन्न बिजली का संकट साल दर साल बढ़ते जा रहा है। यानी ऊर्जा का संकट भी है।

गर्मी के मौसम की शुरूआत से ही पानी की समस्या की खबरें आने लगी हैं। यह संकट साल दर साल बढ़ता जा रहा है। अब यह मौसमी नहींए स्थायी हो गया है। यह समस्या प्रकृति से तो जुड़ी हैए पर कुछ हद तक मानवनिर्मित भी है। आज इस कॉलम में पानी की समस्या पर विस्तार से चर्चा करना चाहूंगाए जिससे इसे समग्रता से समझा जा सके।

हम देख रहे हैं कि बहुत ज्यादा लंबा अरसा नहीं हुआए जब मध्यप्रदेश में बहुत समृद्ध वन हुआ करते थे। सदानीरा नदियां थीं। गांव में कुएंए तालाबए बावड़ियां थीं। नदी.नालों में पानी की बहुतायत थी। वर्षा जल को छोटे.छोटे बंधानों में एकत्र किया जाता थाए जिससे सिंचाईए घरेलू निस्तार और मवेशियों को पानी मिल जाता था। किसान पहले बैलों से चलने वाली मोट से सिंचाई करते थे।

गांव में कच्चे मिट्टी के घर होते थे। घर के आगे.पीछे काफी जगह होती थी। खेती किसानी के काम में घरों में बड़ा आंगन होता था। घर के पीछे सब्जी.बाड़ी होती थी। बाड़ी में हरी सब्जियां लगाई जाती थी। मुनगाए आमए अमरूदए नींबू के पेड़ होते थे। भूमि की सतह का पानी नीचे जज्ब होता था और धरती का पेट भरता था। यानी भूजल ऊपर आता था।

छुटपन में हमारे घर कुएं से पानी आता था। हम नदी में नहाने जाते थे। वहीं मवेशी भी पानी पीते थे। वहां तरबूज.खरबूज की खेती होती थी। मछुआरे मछली पकड़ते थे। कम पानी वाली फसलें होती थी या बिना सिंचाई के भी फसलें हुआ करती थी। बिर्रा ;गेहूं और चना मिलवांद्ध खेती होती थी। अरहरए ज्वार होती थी। उड़द.मूंग व कोदो कुटकी होती थी।

मवेशियों को चरने के लिए जंगल व परती जमीन हुआ करती थी। ल बे घास के मैदान हुआ करते थे। नदी के किनारे भी काफी जगह होती थीए वहां मवेशी चरते और पेड़ों की छाया में बैठते थे।

लेकिन अब जंगल कम हो गए हैंए पेड़ कटते जा रहे हैंए परती जमीन भी दिखाई नहीं देती है। यहां सतपुड़ा पहाड़ों से निकलने वाली नदियां दम तोड़ रही हैं। कुएंए तालाबए बावड़ियां सूख गए हैं। ज्यादा पानी पीने वाली बोनी किस्मों को पानी पिलाने नलकूप खोदे जा रहे हैं। तालाब पट गए हैं।

जैव विविधता में मिट्टी के बाद पानी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जीवन के लिए हवा के बाद पानी बहुत ही महत्वपूर्ण हैए जिसे संजोया जाना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। भोजन के बिना तो कुछ दिन जिया जा सकता हैए लेकिन पानी के बिना जीना मुश्किल है। भोजन और पानी ऐसा संसाधन हैए जिसे कृत्रिम रूप से बनाया नहीं जा सकता है। पानी से मानव ही नहींए समस्त जीव.जगतए पशु पक्षियों का जीवन जुड़ा हुआ है।

मध्यप्रदेश की स्थिति उत्तर भारत से भिन्न है। उत्तर भारत की नदियां हिमजा हैंए वहां वर्षा न भी हो तो उनमें बर्फपिघलने से पानी आएगाए लेकिन मध्यप्रदेश की नदियां वनजा हैंए यानी वन नहीं होंगे तो ये शुष्क हो जाएगी। यह हाल यहां की नदियों का हो गया हैए यहां की जीवन रेखा कहलाने वाली नर्मदा नदी की ज्यादातर सहायक नदियां सूख चुकी हैं। इससे नर्मदा भी कमजोर हो गई है।

हाल के कुछ बरसों से किसानों की एक बड़ी समस्या है बारिश न होना या अनियमित होना। भूजल बरसों में एकत्र होता हैए यही हमारा सुरक्षित जल भंडार है। फिर बिना बिजली के उसे ऊपर खींचना मुश्किल है। पूर्व से आसन्न बिजली का संकट साल दर साल बढ़ते जा रहा है। यानी ऊर्जा का संकट भी है।

अब सवाल है पानी कैसे बचाया जाएघ् जैसे भी होए जहां भी संभव होए बारिश के पानी को वहीं लोगों के खेत तक पहुंचाना चाहिए। जहां पानी गिरता हैए उसे सरपट न बह जाने दें।

स्पीड ब्रेकर जैसी पार बांधकरए उसकी चाल को कम करके धीमी गति से जाने दें। इसके कुछ तरीके हो सकते हैं। खेत का पानी खेत में रहेए इसके लिए मेड़बंदी की जा सकती है। गांव का पानी गांव में रहेए इसके लिए तालाब और छोटे बंधान बनाए जा सकते हैं। चैक डेम बनाए जा सकते हैं। पेड़ए तरह.तरह की झाड़ियां व घास की हरियाली बढ़ाकर जल संरक्षण किया जा सकता है।

शहरों में हारवेस्टर के माध्यम से पानी को एकत्र कर भूजल को ऊपर लाया जा सकता है। इसके माध्यम से कुओं व नलकूप को पुनर्जीवित किया जा सकता है। इसके साथ सबसे जरूरी है खेती में हमें फसलचक्र बदलना होगा। कम पानी या बिना सिंचाई के परंपरागत देशी बीजों की खेती करनी होगी। और ऐसी कई देशी बीजों को लोग भूले नहीं हैए वे कुछ समय पहले तक इन्हीं बीजों से खेती कर रहे थे। देशी बीज और हल.बैल की गोबर खाद वाली की खेती की ओर मुड़कर मिट्टी.पानी का संरक्षण करना होगा। यानी समन्वित प्रयास से ही हम पानी जैसे बहुमूल्य संसाधन का संरक्षण व संवर्धन कर सकते हैं।

यहां उत्तराखंड में वनों के संरक्षण से पानी के परंपरागत स्त्रोत बचाने का अनूठा उदाहरण देना उचित होगा। यहां 80 के दशक में हेंवलघाटी के परंपरागत जलस्त्रोत लगभग सूख चुके थे। लेकिन जब लोगों को गहरा अहसास हुआ कि हमारा बांज.बुरास का जंगल उजड़ रहा हैए और सदाबहार जलस्त्रोत सूख रहे हैंए उन्होंने इन्हें पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया। इसके बाद वे वनों के जतन में जुट गए।

इस काम के पीछे श्चिपको आंदोलनश् की प्रेरणा थी। जड़धार गांव में जहां पहाड़ी के वनों को लोगों ने संरक्षित कियाए चिपको आंदोलन के कार्यकर्ता विजय जड़धारी का गांव है। उनकी जंगल को फिर पुनर्जीवित करने में महती भूमिका है। इस वन को फिर से हरा.भरा करने के लिए उन्होंने उजड़े हुए जंगल की सिर्फ रखवाली कीए यानी जंगल को कुछ सालों के लिए विश्राम दे दिया। और देखते ही देखते जंगल से फिर से जी उठा। उनके और बीज बचाओ आंदोलन के जंगल बचाने के प्रयास से वहां के जलस्त्रोत फिर सदानीरा हो गए। जब वन होंगे तो बादल आएंगेए बारिश होगी। यह ऐसा तरीका हैए जिससे यह सीख मिलती है कि पेड़ों कोए जंगलों को बचाना बहुत जरूरी है।

इस प्रकारए वृक्षारोपण और जंगल बचाने के साथ मेड़बंदीए तालाब बनाने का काम कई जगह हुआ है। राजस्थान में तो पानी बचाने की बहुत ही अच्छी परंपरा है। दो वर्ष पहले मैंने राजस्थान के कुछ जिलों का दौरा किया था और वहां के तालाब देखे थे। वहां के कई तालाब तो बरसों पुराने हैंए उनके रखरखाव के नियम.कायदे भी गांव वालों ने बनाए हैंए जिससे उनका पानी साफसुथरा व पीने योग्य बना रहे। इन तालाबों में गंदगी नहीं थीए क्योंकि वहां का समाज मिलकर इसकी देखरेख करता है। उन्हें इनकी चिंता है। इसके अलावाए वहां हर घर में टंकी हैए जिसमें वे बारिश के दिनों में पानी का संग्रह करते हैंए जिसका उपयोग वे साल भर करते हैं। बारिश के पानी की एक.एक बूंद को एकत्र करने की अच्छी परंपरा है।

इसके साथ ही अगर हमारे गांवों के आसपास वन हैंए पेड़ हैंए उनकी रक्षा करनी जरूरी है। यदि प्राकृतिक वन नहीं हैंए तो बड़े पैमाने पर स्थानीय प्रजातियों के पेड़ लगाने चाहिए। नर्मदापुरम जिले में एक है काकड़ीए वहां के आदिवासियों ने गांव में काफी पेड़ लगाए हैं। जिससे न केवल उनके गांव में हरियाली आ गई हैए बल्कि उनकी जरूरतें भी पूरी हो जाती हैं। पौष्टिक फलए चाराए ईंधनए हरी पत्ती का खादए रेशे और दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुएं भी मिल जाती हैं। इस तरहए अगर इसी तरह इस दिशा में अगर समन्वित प्रयास किए जाए तो जलसंकट का समाधान हो सकेगा। लेकिन क्या हम इस दिशा में कुछ सचमुच प्रयास करना चाहेंगे?

विविध समाचार

बीजापुर पहुंचें प्रभारी मंत्री केदार कश्यप, धान उपार्जन केंद्र तुरनार में किसानों का तिलक एवं पुष्प गुच्छ से किया सम्मान

बीजापुर ०१/१२ (संवाददाता): छत्तीसगढ़ शासन के वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तथा बीजापुर जिले के प्रभारी मंत्री केदार कश्यप ने अपने बीजापुर प्रवास के दौरान आज धान उपार्जन केंद्र तुरनार पहुँचकर जिले के अन्नदाताओं से भेंट की। खरीफविपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत 15 नवंबर से समर्थन मूल्य पर धान खरीदी पूरे प्रदेश में सुचारू रूप से जारी है। बीजापुर जिले में भी यह प्रक्रिया प्रभावी व्यवस्था के साथ संचालित की जा रही है। प्रभारी मंत्री श्री कश्यप ने धान बेचने पहुंचे किसानों का तिलक लगाकर एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरुआत छत्तीसगढ़ महतारी के छायाचित्र पर दीप प्रज्ज्वलन से हुई। धान खरीदी राज्य का महापर्व—किसानों के सम्मान का उत्सव: मंत्री कश्यप किसानों को संबोधित करते हुए मंत्री श्री कश्यप ने कहा कि छत्तीसगढ़ शासन धान खरीदी को एक महापर्व और उत्सव के रूप में मना रहा है, जिससे किसानों में उत्साह और उमंग का वातावरण बना है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, इसी उद्देश्य से 31 सौ रुपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य पर धान खरीदी और प्रति एकड़ 21 क्विंटल की खरीदी सीमा निर्धारित की गई है। उन्होंने कहा, सरकार किसानों के पसीने की कीमत जानती है। आपकी उपज का एक-एक दाना खरीदा जाएगा और किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाया जाएगा। पिछले वर्ष भी रिकॉर्ड खरीदी हुई थी और इस वर्ष उससे अधिक धान खरीदा जाएगा। धान उपार्जन की व्यवस्थाएँ हुई मजबूत मंत्री श्री कश्यप ने बताया कि धान खरीदी को सुचारू रखने के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं—बारदाने की पर्याप्त उपलब्धता धान राशि का त्वरित अंतरण उपार्जन केंद्रों में मूलभूत सुविधाएँ टोकन निर्गम की सुगमता 'टोकन तुहर हाथ' मोबाइल ऐप से किसानों द्वारा स्वयं टोकन काटने की सुविधा माइक्रो एटीएम द्वारा नगद निकासी की व्यवस्था से किसानों को अवगत कराते हुए कहा कि इन सभी उपायों से धान उपार्जन प्रक्रिया और अधिक सरल एवं पारदर्शी बनी है।

1 करोड़ 30 लाख रुपये के नशीले तेल की तस्करी का भंडाफोड़

जगदलपुर ०१/१२ (संवाददाता): बस्तर पुलिस ने ड्रग तस्करी के खिलाफ एक महत्वपूर्ण सफलता दर्ज करते हुए बोधघाट थाना क्षेत्र में 10 किलो से अधिक गांजा और हशीश से तैयार नशीला तेल जब्त किया है। बरामद हाई-कंसंट्रेशन ऑयल की अनुमानित अंतरराज्यीय कीमत करीब 1 करोड़ 30 लाख रुपये बताई गई है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने ओडिशा के दो तस्करों को गिरफ्तार किया, जो इसे छत्तीसगढ़ की सीमा से होते हुए हैदराबाद, मुंबई और पुणे तक सप्लाई करने की योजना में थे। यह बस्तर पुलिस की इस वर्ष की सबसे बड़ी ड्रग्स जब्ती मानी जा रही है। मुखबिर से मिली सूचना पर रेलवे साइडिंग क्षेत्र के पास नाकाबंदी की गई और ओडी 30 डी 6588 नंबर की बाइक को रोककर जांच की गई। बाइक सवार युवकों की पहचान कोरापुट जिले के सीताराम कुलदीप (35) और रामचंद्र माड़ी (21) के रूप में हुई। तलाशी में बैग व कंटेनरों से नशीला तेल मिला, जिसकी गुणवत्ता जांच में प्रीमियम श्रेणी का ड्रग होने की पुष्टि हुई। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे हैदराबाद में इलेक्ट्रिशियन का काम करते हैं, लेकिन अतिरिक्त कमाई के लिए मलकानगिरी-कोरापुट क्षेत्र से नशीला तेल लाकर बड़े शहरों में पहुंचाते थे। पुलिस को शक है कि इनके पीछे बड़ा नेटवर्क सक्रिय है, जिसके संपर्क, मोबाइल डेटा और लेनदेन की जांच की जा रही है। दोनों आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। बस्तर आईजी और एसपी ने कार्रवाई में शामिल टीम की सराहना करते हुए कहा कि यह ड्रग सप्लाई चेन को कमजोर करने की दिशा में अहम कदम है। पुलिस के अनुसार बस्तर-ओडिशा सीमा क्षेत्र लंबे समय से ड्रग ट्रांसपोर्ट का संवेदनशील मार्ग रहा है। इस पूरी कार्रवाई के बाद सीमावर्ती क्षेत्रों में अतिरिक्त निगरानी, गश्त और इंटेलिजेंस तंत्र मजबूत करने के निर्देश जारी किए गए हैं। पुलिस का दावा है कि जल्द ही इस नेटवर्क से जुड़े और लोगों की पहचान व गिरफ्तारी संभव है।

फर्जी कंपनी बनाकर 5.51 लाख की ठगी, आरोपी मिर्जापुर से पकड़ा गया

कवर्धा ०१/१२ (संवाददाता):पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह के नेतृत्व में कबीरधाम पुलिस द्वारा आर्थिक अपराध और ऑनलाइन ठगी के मामलों पर लगातार की जा रही कार्रवाई के तहत एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र बघेल एवं पंकज पटेल के मार्गदर्शन में थाना कोतवाली कवर्धा की टीम ने काव्या इंडस्ट्रीज के नाम पर सुपर डिस्ट्रीज्यूटर बनाने का झांसा देकर लाखों रुपये की ठगी करने वाला आरोपी मनोज श्रीवास्तव पिता स्व. दयाशंकर श्रीवास्तव, उम्र 45 वर्ष, निवासी दाऊतपुर गोरखपुर उज़र प्रदेश तथा वर्तमान पता बंसुंधरा, गाजियाबाद को उज़रप्रदेश से गिरफ्तार किया है। प्रार्थी नवीन जैन, निवासी महावीर स्वामी चौक कवर्धा द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी कि आरोपी ने स्वयं को काव्या इंडस्ट्रीज का मैनेजिंग डायरेक्टर बताकर उनसे कुल 5,51,000 रुपये की ठगी की। आरोपी ने प्रार्थी को सुपर डिस्ट्रीज्यूटर नियुक्त करने का प्रलोभन देकर विभिन्न खातों में रकम जमा करवाई तथा फर्जी टैक्स इनवॉइस, ई-वे बिल और कंपनी के नाम से ई-मेल भेजकर धोखे में रखा। प्रार्थी द्वारा लखनऊ स्थित कंपनी के पते पर जाकर जांच करने पर पाया गया कि वहां ऐसी कोई कंपनी अस्तित्व में नहीं है। थाना कवर्धा में मामला अपराध क्रमांक 87/2024 धारा 420 भा.द.वि. दर्ज कर विवेचना प्रारंभ की गई। आरोपी के लोकेशन के आधार पर पुलिस टीम बिहार के पूर्वी चंपारण तक गई, जहाँ आरोपी चकमा देकर फरार हो गया था। इसके बाद आरोपी की गतिविधियों पर निगरानी रखते हुए उसे पुन: उज़र प्रदेश राज्य के चुनार, जिला मिर्जापुर से 21.11.2025 की रात्रि में हिरासत में लिया गया। पूछताछ में आरोपी ने अपराध स्वीकार किया तथा बताया कि ठगी की गई रकम का उपयोग उसने स्वयं व संजीव मिश्रा (प्रतापगढ़, उ.प्र.) के साथ मिलकर किया है। संजीव मिश्रा अभी फरार है, जिसकी तलाश जारी है। आरोपी आदतन ठग है तथा विभिन्न राज्यों में कई लोगों को इसी प्रकार का आर्थिक नुकसान पहुँचा चुका है। आरोपी को दिनांक 22.11.2025 को रात 21.00 बजे विधिवत गिरफ्तार किया गया तथा परिजनों को गिरफ्तारी की सूचना दे दी गई। उपरोक्त कार्यवाही में थाना कोतवाली प्रभारी निरीक्षक योगेश कश्यप, एएसआई राजकुमार चंद्रवंशी, डीएसबी से एएसआई संदीप चौबे, एचसी चुन्मन साहू, अभिनव तिवारी का विशेष योगदान रहा। कबीरधाम पुलिस नागरिकों से अपील करती है कि अनजान व्यक्तियों द्वारा दिए जाने वाले व्यावसायिक प्रस्तावों, निवेश योजनाओं एवं ऑनलाइन सौदों की सत्यता की जांच अवश्य करें। किसी भी प्रकार की ठगी या संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तत्काल निकटतम पुलिस स्टेशन को दें।

संजय मिज़ल ने दान की सात हार्ट चेकअप मशीनें

रायपुर ०१/१२ (संवाददाता): मुज्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार एवं कलेज्टर डॉ. गौरव सिंह के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन द्वारा आंगनबाड़ी एवं स्कूली बच्चों के हृदय जांच हेतु प्रोजेज्ट धड़कन संचालित किया जा रहा है।यह प्रोजेज्ट सत्य साईं हॉस्पिटल, नवा रायपुर के सहयोग से संचालित हो रहा है। इसी क्रम में रायगढ़ के सिंघल स्टील उद्योग के श्री संजय मिज़ल ने कलेज्टर डॉ. गौरव सिंह से मुलाकात कर हृदय जांच के लिए सात हाई-डेफिनेशन स्टेथोस्कोप एवं टैबलेट दान किया । इन सात मशीनों में से चार मशीनें स्वास्थ्य विभाग तथा तीन मशीनें महिला एवं बाल विकास विभाग को प्रदान की गई हैं।कलेज्टर डॉ. गौरव सिंह ने बताया कि अब तक जिले के 12,000 से अधिक आंगनबाड़ी केंद्रों और स्कूलों के बच्चों की जांच की जा चुकी है। इस योजना के तहत जिन बच्चों में हृदय संबंधी समस्या पाई जाती है, उन्हें आगे की जांच के लिए सत्य साईं हॉस्पिटल, नवा रायपुर भेजा जाता है। किसी भी बच्चे में गंभीर बीमारी की पुष्टि होने पर जिला प्रशासन द्वारा उसका नि:शुल्क उपचार सुनिश्चित किया जाता है। कलेज्टर ने कहा, इस योजना का उद्देश्य है कि जिले का कोई भी बच्चा हृदय रोग से पीड़ित न रहे और सभी बच्चे स्वस्थ व सुरक्षित रहें।

डॉ. सिंह ने कहा कि मशीनों की संज्या बढ़ने से हम जिले के हर बच्चे तक जल्द से जल्द पहुंचाने का प्रयास करेंगे और उनके सफल परीक्षण करवाएंगे । इस अवसर पर अपर कलेज्टर श्रीमती नम्रता जैन, जिला पंचायत ईओ कुमार विश्वरंजन, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी सुश्री शैल ठाकुर, मुज्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मिथिलेश चौधरी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

तालाब में डूबने से दो मासूम चचेरे भाइयों की मौत

कांकेर ०१/१२ (संवाददाता): *छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में रविवार को एक दर्दनाक हादसा हो गया। यहां तालाब में डूबने से एक ही परिवार के दो मासूम बच्चों की मौत हो गई। दोनों बच्चे चचेरे भाई बताए जा रहे हैं। इस घटना ने पूरे गांव को शोक में डूबो दिया है। यह पूरा मामला चारामा थाना क्षेत्र का है। जानकारी के अनुसार, रविवार दोपहर करीब 2 बजे ग्राम उड़कुड़ा के जोगी गुफा स्थित तालाब के पास तीन मासूम बच्चे खेल रहे थे। इसी दौरान 2 बच्चे लोमेश और आयुष पानी में उतरकर खेलने लगे।*

0-5 वर्ष के बच्चों को निमोनिया से बचाव के लिए नियमित टीकाकरण जरूरी

० बाल निमोनिया से जागरूकता और रोकथाम के लिए 28 फरवरी तक विशेष अभियान

कवर्धा ०१/१२ (संवाददाता): जिले में 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को निमोनिया से बचाव व जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सांस (सोशल अवेयरनेस एंड एज़्शन टू न्यूट्रलाइज न्यूमोनिया सज़्सेसफुली) अभियान 12 नवज़्बर 2025 से शुरू हो गया है। यह अभियान आगामी 28 फरवरी 2026 तक चलेगा। इस अभियान का लक्ष्य 0-5 वर्ष के बच्चों को निमोनिया से बचाने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना और इसके लक्षण, कारण तथा उपचार के उपायों की जानकारी प्रदान करना है। इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा की दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है ज़्योकि पांच साल तक के बच्चों की मृत्यु का एक बड़ा कारण निमोनिया है। इस अभियान के तहत न्यूमोकोकल कान्जुगेट वैज़सीन (पीसीवी) के महत्व को समझाया जा रहा है। टीकाकरण को प्रोत्साहित किया जा रहा है। मुज़्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ डी. के. तुर्रे ने सर्दियों के मौसम में विश्व सावधानी रखने की सलाह दी। डॉ. सलिल मिश्रा (शिशु रोग विषेषज्ञ) एवं डॉ. जूही सोनवानी (शिशु रोग विषेषज्ञ), आराधना बंजारे (डीपीएचएन) ने प्रशिक्षण में निमोनिया की रोकथाम और उपचार के तरीकों की जानकारी दी। नियमित टीकाकरण ही कारगर उपाय विशेषज्ञ चिकित्सकों ने बताया कि नियमित टीकाकरण से बच्चों में होने वाले निमोनिया को रोका जा सकता है। इसके लिए न्यूमोकोकल कान्जुगेट वैज़सीन (पीसीवी) के डोज लगाए जाते हैं। बच्चों को यह टीका 6 सप्ताह, 14 सप्ताह और 9वें महीने में लगाया जाता है। विभाग की टीम घर-घर जाकर निमोनिया से बचाव के उपाय, टीकाकरण की जानकारी साझा करेगी। प्रशिक्षण के दौरान स्वास्थ्य कर्मियों को आज़सीजन कंसट्रेटर और नेबुलाइजर के उपयोग के साथ पोषण व स्वच्छता के महत्व पर जोर देने कहा गया।

सांसों से बढ़कर दुनिया में कुछ है?

मनुष्य के जीवन का आधार पर्यावरण है, अगर पर्यावरण सुरक्षित होगा तो ही, जीवसृष्टी का संरक्षण संभव हैं। हमारे आसपास के वातावरण में मौजूद आवश्यक तत्वों की मौजूदगी पर्यावरण का अमूल्य हिस्सा है, जैसे – हवा, पानी, धूप, पहाड़, नदियां, समुद्र, जंगल, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जमीन, आकाश, धातु, खनिज, हिमखंड व अन्य मिलकर पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाते हैं। यह तत्व भी एक–दूसरे के पूरक होते है एवं हमारे जीवन के प्रत्येक गतिविधि पर असर डालते हैं। पर्यावरण हमारे लिए सबसे ज्यादा जरूरी है, इसकी रक्षा अर्थात मनुष्य जीवन की रक्षा है, परंतु कई बार विकास के नाम पर, भ्रष्टाचार, अपराध, लापरवाही और स्वार्थ के कारण हमारा पर्यावरण बेहद तेजी से बर्बाद हुआ हैं। जिसके कारण जानलेवा बीमारियों ने तेजी से पैर पसारे है और असमय मौत की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धी हुयी हैं। अब बीमारियां उम्र के हिसाब से नहीं बल्कि प्रदूषण और खराब जीवनशैली के हिसाब से होती हैं। आज देश में शुद्ध हवा पानी भोजन और सुख–शांति से जीने के लिए पोषक वातावरण मिलना दुर्लभ हो रहा हैं। इसी समस्या के प्रति जागरूकता हेतु पर्यावरण बचाने के लिए हर साल 26 नवंबर को षविश्व पर्यावरण संरक्षण दिवसष पूरी दुनिया में मनाया जाता हैं। हमारे देश में पाश्चात्य देशों की तुलना में बहुत अधिक प्रदूषण, लोगों में लापरवाही, अपराधवृत्ति, स्वार्थ और सहने की आदत हैं। हमारे आसपास के छोटे–छोटे देश भी पर्यावरण के संरक्षण में हमसे आगे है, उदाहरण के लिए भूटान देश अपने प्राकृतिक सौंदर्य को बेहतर ढंग से संजोकर आगे बढ़ रहे है, जिसका असर वहां के नागरिकों के सेहत पर भी नजर आता हैं। विकसित राष्ट्रों में सख्त नियम–कानून का कड़ाई से पालन किया जाता है, ताकि पर्यावरण को नुकसान न हों, पर्यावरण संरक्षण के प्रति वहां सरकार सख्ती से पेश आती है और जनता को भी परेशानी न हों, उसका भी खास ख्याल रखा जाता है, संभावित विविध पर्यायों का क्रियान्वयन किया जाता हैं। ऐसे माहौल में जनता भी सरकार के पर्यावरण और स्वास्थ्य पूरक बेहतर कार्यों में पूरा सहयोग देती है, इसके मुकाबले हम आज भी बहुत पिछड़े हुए नजर आते है, जीवन के लिए सबसे आवश्यक शुद्ध वातावरण है, लेकिन हम आज भी पर्यावरण को खराब करने पर तुले हुए हैं। जागरूकता केवल दिन विशेष पर और दिखावे के लिए की जाती है, ऐसा अक्सर प्रतीत होता हैं। हमारे शहरों से बहने वाली अधिकाधिक नदियों का स्वरूप नालों की भांति नजर आता है, अरबों रुपये खर्च कर नदियों के स्वच्छता के दावो की सच्चाई भी हम देखते है, भ्रष्टाचार और लीपापोती का साम्राज्य पर्यावरण को तेजी से बर्बाद कर रहा हैं। स्विस कंपनी आयक्यूएअर द्वारा जारी वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट 2024 में भारत को दुनिया का पांचवा सबसे प्रदूषित देश बताया गया है। दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी हैं। दुनिया के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से 6 और शीर्ष 20 में से 13 शहर भारत में हैं।

हाल ही के अध्ययन अनुसार, एयर पॉल्यूशन से भारत में हर साल 1.7 मिलियन से 2 मिलियन लोगों की मौत होती हैं। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2025 रिपोर्ट के मुताबिक 2023 में करीब 2 मिलियन मौतें और 2022 की लैंसेट रिपोर्ट के मुताबिक 1.7 मिलियन से ज़्यादा मौतों का अंदाज हैं। आउटडोर और इनडोर एयर पॉल्यूशन की वजह से दिल की बीमारी, स्ट्रोक और सीओपीडी जैसी नॉन–कम्युनिकेबल बीमारियों से होने वाली मौतें होती हैं। इसी प्रकार जल प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, मृदा प्रदूषण और अस्वच्छता के कारण बड़ी मात्रा में असमय मासूम जिंदगियां छीन जाती है, साथ ही बीमारियों का जंजाल तन–मन के साथ–साथ जीवन के हर स्थिति पर गंभीर आघात करता हैं। रेडियोधर्मी प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण हमें मौत के आगोश में धकेलता हैं। हमारे देश में जब तक लोग जागरूक नहीं होंगे तब तक ये व्यवस्था नहीं सुधरेंगी। पर्यावरण के रक्षा के लिए स्वार्थ और लालच छोड़कर अनमोल जीवन की कीमत समझनी होंगी। अनाज के लिए हानिकारक रसायनों के उपयोग को खत्म करके जैविक खेती को अपनाना समय की मांग है, हम अपने आसपास रोज पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रणाली को नुकसान पहुंचानेवाले घटनाओं को देखते है, लेकिन ऐसी समस्याओं पर अधिकतर लोग अपने कर्तव्य को निभाने की कोशिश भी नहीं करतें। आवश्यकता, मांग के नाम पर शहरों से जमीन गायब होकर सीमेंट में तब्दील हो रही है, पनपने के लिए पर्याप्त मिट्टी न होने के कारण शहरों में पेड़ कम हो रहे है, बरसात के मौसम में हल्की हवा से बचे हुए चंद पेड़ भी सड़कों पर उखड़कर गिर जाते हैं। बारिश का पानी सोखने के लिए शहरों में जमीन नजर नहीं आती। जल्द ही अकाल या बाढ़ की स्थिति बन जाती है, तापमान लगातार बढ़ रहा है, ऋतुओं का चक्र बिगड़ रहा है, जिससे लगातार फसलों को नुकसान पहुंचता है, मानवीय शरीर कमजोर हो रहा हैं। अक्सर देखते है कि, सड़कों पर नल का पानी बहता है, दिन में सड़कों के पथदीप शुरू रहते है, लोग बेखौफ सड़कों के किनारे कचरा फेंकते है, खुले में कचरा जलाते है, राह चलते थूकते जाते हैं। प्रतिबंधित प्लास्टिक का धड़ल्ले से उपयोग होता है, कारखानों का घातक रासायनिक जल खुले में या खेतों में छोड़ा जाता है, नदियों में कचरा डालते है, बायोमेडिकल कचरा और यांत्रिकी कचरे का योग्य पद्धति से निपटान नहीं करते है, सीमित प्राकृतिक संसाधनों और ईंधन का अत्यधिक प्रयोग पर्यावरण के साथ संपूर्ण जीवसृष्टि के लिए खतरा बन रहा हैं। अस्वच्छता के कारण बीमारियों का साम्राज्य भी चरम पर होता हैं। अपशिष्ट के पुनर्चक्रण प्रणाली को गति नहीं मिल रही। बिना डर के मिलावटखोरी चलती है, अधिकतर बस्तियों, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी का आलम बरकरार दिखता हैं। लोगों को आँगन में पेड़ की जगह एक अधिक कमरा चाहिए, हर तरफ सड़कों, गलियों में अतिक्रमण नजर आता हैं। पर्यावरण को बचाने और अपनी सेहत को स्वस्थ रखने के लिए हम जितना संभव हो सके पैदल चलकर, साइकिल चलाकर या सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करके कार्बन फुटप्रिंट कम कर सकते हैं। घरों या संस्थानों में ग्रीन ऊर्जा का प्रयोग कर सकते है, पुनर्चक्रण के द्वारा वस्तुओं का फिर से इस्तेमाल कर सकते हैं। प्लास्टिक के बजाय उसके अन्य पर्याय पर ध्यान दें, सिंगल–यूज प्लास्टिक प्रयोग से बचें।

बचे हुए खाद्य को फेंकने के बजाय उनसे कम्पोस्ट बनाएं और सस्टेनेबल सोर्स से बने प्रोडक्ट, इको–फ्रेंडली सफाई प्रोडक्ट इस्तेमाल करें, स्वच्छता भागीदारी बढ़ाएं, अधिकाधिक पेड़ लगायें। मनुष्य अपनी असीमित आकांक्षाओं और जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण के रक्षा के बजाय उसका दोहन कर रहा हैं। मनुष्य से बेहतर तो पशु–पक्षी, जानवर, जीव–जंतु है, जो प्रकृति को बचाने में अनमोल भूमिका निभाते हैं। हमें अपना आलस और स्वार्थ छोड़कर पर्यावरण की रक्षा और अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी बखूबी निभानी होंगी, यह सुन्दर, स्वच्छ, अनुकूल पर्यावरण बचेगा, तभी हम पृथ्वी पर आराम से जी पायेंगे, यह सच्चाई सबने समझनी होंगी। जैसे प्रकृति हमें निस्वार्थ भाव से हमेशा देती जाती है, उसी प्रकार हमें भी उसका ख्याल रखना जरुरी बन जाता हैं। पैसों से हम सांसे नहीं खरीद सकते, जीवनावश्यक संसाधनों की पूर्ति प्रकृति द्वारा ही होती हैं। मनुष्य पर्यावरण से छेड़छाड़ करने से बचें, वरना प्रकृति अपना विनाशकारी रौद्र रूप दिखा ही रही हैं।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार

राउरकेला, मंगलवार 02 दिसंबर 2025

पांच लाख जमाकर्ताओं को तीन-चार महीने में चिटफंड का पैसा वापस मिलेगा-मनमोहन सामल

भुवनेश्वर ०१/१२ (संवाददाता):राज्य भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल ने घोषणा की कि चिटफंड कंपनियों में निवेश करने वाले करीब पांच लाख जमाकर्ताओं को अगले तीन से चार महीनों में धन वापसी मिल जाएगी।यहां एक मीडिया सज़्मेलन को संबोधित करते हुए सामल ने कहा कि राज्य में सरकार बनने के बाद भाजपा ने चिटफंड कंपनियों द्वारा ठगे गए सभी पात्र जमाकर्ताओं की सूची तैयार करना शुरू कर दिया है।

उन्होंने कहा कि महज एक साल के भीतर 1,26,137 जमाकर्ताओं को उनका पैसा वापस मिल चुका है। भाजपा के एक और बड़े वादे को पूरा करने के लिए मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी को धन्यवाद देते हुए सामल ने कहा, राज्य सरकार ने चिटफंड कंपनियों में अपना पैसा गंवाने वाले जमाकर्ताओं की सूची तैयार की है। हालांकि, यह सूची अंतिम नहीं है और सरकार इसे अपडेट करना जारी रखेगी। जिन लोगों के नाम सूची में नहीं हैं, वे भी अपने निवेश से संबंधित एक छोटा सा कागज दिखाकर धन वापसी के लिए आवेदन कर सकते हैं।

चिटफंड घोटाले में कई मंत्रियों, सांसदों, विधायकों और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की कथित संलिप्तता को लेकर सामल ने पिछली बीजद सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद जांच आयोग का गठन किया गया और कॉर्पस फंड का गठन किया गया, लेकिन तत्कालीन सरकार ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की। आम लोगों ने पिछली सरकार पर भरोसा करके चिटफंड कंपनियों में निवेश किया था। लेकिन बीजेडी नेताओं ने लोगों को धोखा दिया। वे अपना पैसा वापस पाने की सारी उज़्मीद खो चुके थे। हालांकि, भाजपा सरकार पार्टी घोषणापत्र में किए गए वादे के अनुसार सभी प्रभावित जमाकर्ताओं को पैसा वापस करने के लिए प्रतिबद्ध है, सामल ने जोर देकर कहा।

ट्रक और वैन में टक्कर, दो की मौत, चार घायल

राउरकेला ०१/१२ (संवाददाता):सुंदरगढ़ जिले के कोइड़ा पुलिस सीमा के अंतर्गत जेएसडज़्ल्यू माइन गेट के पास मिरीगिडेगा में शुक्रवार सुबह तेज रज़्तार हाइवा ट्रक और वैन की आमने-सामने की टक्कर में दो लोगों की मौत हो गई और चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने मृतकों की पहचान ज्योंझर जिले के अभिमन्यु सिंकू (34) और पड़ोसी झारखंड के साजन यादव (26) के रूप में की है, जो कामांडा स्टील प्लांट (केएसपी) के दोनों संविदा कर्मचारी थे। यह दुर्घटना राउरकेला से करीब 120 किलोमीटर दूर कोइड़ा मार्केट रोड पर सुबह 7.30 से 8 बजे के बीच हुई। कोइड़ा पुलिस स्टेशन के आईआईसी जेआर पति ने बताया कि केएसपी के छह संविदा कर्मचारी वैन में सवार होकर प्लांट जा रहे थे, तभी विपरीत दिशा से आ रहे हाइवा ट्रक ने उनके चार पहिया वाहन को टक्कर मार दी। सिंकू और यादव की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चार अन्य कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें कोइड़ा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) ले जाया गया और प्रारंभिक उपचार के बाद राउरकेला के जेपी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। आईआईसी ने बताया कि मृतकों के शवों को शनिवार को पोस्टमार्टम के लिए सीएचसी के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया गया है। ट्रक छोड़कर मौके से फरार हुए ट्रक चालक को पकड़ने के प्रयास जारी हैं।

आरसीएम विभाग में इन-हाउस विकसित परीक्षण सुविधा का उद्घाटन

राउरकेला ०१/१२ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र के केंद्रीयकृत रखरखाव (यांत्रिक) विभाग के मरमत भवन में मुज़्य महाप्रबंधक प्रभारी (मैकेनिकल एवं शॉप्स), श्री आर एन राजेंद्रन द्वारा सुरक्षा वाल्वों के लिए इन-हाउस विकसित परीक्षण सुविधा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुज़्य महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री देवेंद्र कुमार पालो, महाप्रबंधक प्रभारी (सीएम-एम), श्री एस के पंका, महाप्रबंधक (सीएम-एम), श्री एस पी पटेल, सहायक महाप्रबंधक (सीएम-एम), श्री एस अज़्तर, अन्य वरिष्ठ अधिकारी और बड़ी संज़्या में विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे। अपने संबोधन में श्री राजेंद्रन ने इन-हाउस सुविधा की अवधारणा और विकास के लिए टीम के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने पूरे संयंत्र में आत्मनिर्भरता, परिचालन दक्षता और सुरक्षा मानकों को बढ़ाने में ऐसी पहलों के महत्व पर जोर दिया। नवनिर्मित सुविधा को सुरक्षा वाल्वों के सुचारू और कुशल परीक्षण को सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो चाप आवश्यकताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करता है, जिससे संयंत्र की विभिन्न उत्पादन इकाइयों को सहायता मिलती है। इस आंतरिक क्षमता से रखरखाव कार्यों में टर्नअराउंड समय और विश्वसनीयता में उल्लेखनीय सुधार होने की उज़्मीद है।

सरकार ने खनन में कमी के लिए टाटा स्टील पर 1,902 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया

भुवनेश्वर ०१/१२ (संवाददाता):ओडिशा सरकार ने टाटा स्टील लिमिटेड को कंपनी के सुकिंदा क्रोमाइट ज़्लॉक से खनिजों के प्रेषण में कथित कमी के लिए 1,902.72 करोड़ रुपये का डिमांड नोटिस जारी किया है। मांग में कमी की मात्रा का बिक्री मूल्य और प्रदर्शन सुरक्षा का विनियोजन शामिल है। जाजपुर जिले में स्थित यह ज़्लॉक देश की सबसे बड़ी क्रोमाइट खदानों में से एक है।सूत्रों ने बताया कि खान उप निदेशक, जाजपुर के कार्यालय ने गुरुवार को खान विकास एवं उत्पादन समझौते (एमडीपीए) के अनुसार कंपनी की सुकिंदा खदानों से चौथे वर्ष के लिए खनिजों के प्रेषण में कमी के संशोधित आकलन के संबंध में मांग नोटिस जारी किया, जो 23 जुलाई, 2023 से 22 जुलाई, 2024 की अवधि को कवर करता है, जो खनिज (परमाणु और हाइड्रोकार्बन ऊर्जा खनिजों के अलावा) रियायत नियम, 2016 के नियम 12ए का कथित उल्लंघन है। उप निदेशक ने कहा है कि कथित बकाया राशि की वसूली के लिए स्टील निर्माता की प्रदर्शन सुरक्षा को उचित ठहराने के लिए कदम उठाए जाएंगे। उठाई गई मांग भारतीय खान ज़्यूरो (आईबीएम) द्वारा अधिसूचित खनिजों की पुनर्गणना की गई औसत बिक्री कीमतों पर आधारित है। टाटा स्टील ने शुक्रवार को अपनी नियामक फाइलिंग में खानों के डीडी, जाजपुर से 1902,72,53,760 रुपये की मांग प्राप्त करने की बात स्वीकार की है। हालांकि, कंपनी ने दावों का खंडन किया और बीएसई इंडिया को सूचित किया कि वह मांग नोटिस को कानूनी रूप से चुनौती देगी। स्टील प्रमुख ने स्पष्ट किया कि गणना प्रेषण मात्रा में किसी वास्तविक विसंगति के बजाय राज्य की संशोधित मूल्य पद्धति पर आधारित हो सकती है। प्रबंधन का मानना है कि राज्य की मांगों में औचित्य और ठोस आधार का अभाव है। तदनुसार, कंपनी उचित न्यायिक या अर्ध-न्यायिक मंचों के समक्ष उपयुक्त कानूनी उपायों का अनुसरण करेगी, इसने कहा।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एज़्सपायरी दवा का इंजेज़्शन लगाने पर एक व्यक्ति निलंबित

केन्द्रपाड़ा ०१/१२ (संवाददाता):केन्द्रपाड़ा के मुज़्य जिला चिकित्सा अधिकारी (सीडीएमओ) ने शुक्रवार को महाकालपाड़ा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (सीएचसी) के फार्मासिस्ट को एक मरीज को एज़्सपायरी इंजेज़्शन लगाने के आरोप में निलंबित कर दिया। सूत्रों ने बताया कि चंदियापल्ली गांव की 20 वर्षीय महिला को 24 जून को विभिन्न बीमारियों के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया था। उपचार के दौरान फार्मासिस्ट भक्तकांत बिस्वाल ने कथित तौर पर उसे एज़्सपायरी इंजेज़्शन लगा दिया।ॽद्यह्वश ऋद्धस्त्र - नयागढ़ जिले में बैंक से 27 लाख रुपये लूटने के आरोप में चार गिरज़्तार महिला के भाई को इस गड़बड़ी का पता चला और उसने तुरंत सीएचसी के चिकित्सा अधिकारी के पास लिखित शिकायत दर्ज कराई। शिकायत पर कार्रवाई करते हुए चिकित्सा अधिकारी डॉ. निरंजन कर ने फार्मासिस्ट को कारण बताओ नोटिस जारी किया कि ज्यों न उसके खिलाफ कर्तव्य में लापरवाही बरतने के लिए कार्रवाई की जाए। अपने जवाब में बिस्वाल ने स्वीकार किया कि उसने मरीज को गलत तरीके से एज़्सपायरी इंजेज़्शन लगाया था। केन्द्रपाड़ा सीडीएमओ डॉ. मनोरंजन राउत ने बताया कि महाकालपाड़ा सीएचसी के चिकित्सा अधिकारी की जांच रिपोर्ट के आधार पर फार्मासिस्ट को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। निलंबन अवधि के दौरान उन्हें ओडिशा सेवा संहिता के नियम 90 के अंतर्गत वेतन मिलेगा।

स्मार्ट सिटी का स्वास्थ्य विगाड़ रहे हैं खटाल

राउरकेला ०१/१२ (संवाददाता): स्मार्ट सिटी राउरकेला के अंदर बने 50 से अधिक खटाल के चलते गंदगी फैल रही है एवं इससे मलेरिया व डेंगू का खतरा बढ़ गया है। नगर निगम व स्मार्ट सिटी राउरकेला की ओर से शहर के सौंदर्यीकरण व विकास के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं पर बीमारी का कारण बन रहे इन खटालों को हटाने की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है।

शहर के बीच डेली मार्केट, कलिंग विहार, तरकेरा, पानपोष, वेदव्यास, बसंती कालोनी, शिवशंकर नगर, शीतलनगर, टिंबर कालोनी, रेलवे स्टेशन खटाल बस्ती, सिविल टाउनशिप, पानपोष, रेलवे कालोनी, सेज़्टर.2, सेज़्टर.6 एच ज़्लॉक, सेज़्टर.7, सेज़्टर.20 मिश्रा खटाल, डीएवी बस्ती, कलिंग विहार,नेहरू बस्ती समेत अन्य क्षेत्रों में खटाल हैं। राउरकेला नगर निगम एवं इस्पात संयंत्र क्षेत्र में स्थित ये क्षेत्र स्मार्ट सिटी के अधीन हैं।

पूर्व सीआरपीएफ जवान ने परिवार समेत मांगी इच्छामृत्यु, राष्ट्रपति को लिखी चिट्ठी

भुवनेश्वर ०१/१२ (संवाददाता): सीआरपीएफके जवान को नौकरी का झांसा देकर ठगी करने के आरोप में गिरज़्तार किया गया था। इस वजह से उसकी सरकारी नौकरी भी हाथ से निकल गई। अब 14 वर्ष बाद कोर्ट से दोषमुक्त बरी होने के बाद उसकी दोबारा नौकरी बहाली नहीं हो रही है। ऐसे में सीआरपीएफ के पूर्व जवान ने इच्छामृत्यु के लिए आवेदन किया है। यह संवेदनशील मामला ओडिशा के बलांगीर शहर का है। शहर के तलपलीपड़ा में रहने वाले सीआरपीएफ के पूर्व जवान सुधीर दास ने राष्ट्रपति के पास आवेदन देकर अपने परिवार को इच्छामृत्यु की अनुमति देने की मांग की है। वह 2008 में भुवनेश्वर में कार्यरत थे। जानकारी के अनुसार 14 वर्ष बाद अदालत से दोषमुक्त बरी होने वाले सीआरपीएफ जवान को एएसआइ पद पर पदोन्नत किया गया था। हालांकिए वर्ष 2010 में सीआरपीएफ जवान सुधीर के खिलाफबलांगीर सदर थाने में गंभीर शिकायत दर्ज कराई गई थी। नौकरी दिलाने के बहाने लोगों को ठगने के आरोप में उन्हें गिरज़्तार कर लिया गया था। इसके बाद उनकी नौकरी चली गई। 14 साल तक न्यायिक लड़ाई जारी रखने के बाद सुधीर को अदालत ने अब बरी कर दिया है। उच्च न्यायालय ने सुधीर की याचिका पर विचार किया और उन्हें नौकरी पर पुन: बहाल करने के लिए उचित कदम उठाने का निर्देश दिया है। हालांकि सीआरपीएफके जवान सुधीर का आरोप है कि हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी विभाग के अधिकारी नहीं सुन रहे हैं। इसलिए हमने अब राष्ट्रपति को ईमेल लिखकर पूरे परिवार को इच्छामृत्यु की अनुमति देने की मांग की है। उन्होंने धमकी दी है कि अगर उन्हें सेवा के लिए नियुक्त नहीं किया गया तो परिवार दो मार्च को भुवनेश्वर राजभवन के सामने आत्मदाह कर लेगा।

हाथियों के द्वारा फ़सल को नुकसान पहुंचाने से किसानों की नींद हराम

राउरकेला ०१/१२ (संवाददाता):सुंदरगढ़ जिले के लाठीकटा तथा सबडेगा ज़्लॉक में 81 हाथियों के झुंड ने आतंक मचा रखा है। हाथियों के द्वारा फ़सल को नुकसान पहुंचाने से किसानों की नींद हराम हो गई है। वन विभाग की ओर से इन्हें खदेड़ने का प्रयास किया जा रहा हैए लेकिन सफ़लता नहीं मिल रही है। लाठीकटा ज़्लॉक में 41 हाथियों के होने से बुचा हांडाए डाइटोलाए रेलापोषए बिरुआल क्षेत्र के लोग हाथियों से आतंकित हैं।सबडेगा ज़्लॉक में 40 हाथियों का झुंड है। वन विभाग की ओर से हाथियों पर नजर रखने के साथ ही गांवों की ओर उन्हें आने से रोकने का प्रयास किया जा रहा है। लाठीकटा ज़्लॉक के बीरकेरा पंचायत क्षेत्र में तीन दिन से 41 हाथियों के झुंड देखा जा रहा है। इनके झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले के जंगल से इस ओर आने का अनुमान लगाया जा रहा है।इस क्षेत्र में पहले से 21 हाथी थे एवं 20 हाथी और इस झुंड में शामिल हो गए। तीन दिन से बिरुआल गांव के पास जंगल में दिन गुजारने के बाद रात होते ही गांवों की ओर रुख कर रहे हैं।

हाथियों के द्वारा धान की फ़सल को अधिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है। वन विभाग की ओर से हाथियों को खदेड़ने का प्रयास किया जा रहा है पर सफ़लता नहीं मिल रही है। वन विभाग की ओर से ग्रामीणों को टार्च लाइटए पटाखाए मसाल उपलज़्ध कराया जाना चाहिए पर ऐसा नहीं करने से ग्रामीणों में असंतोष है। सबडेगा वन मंडल क्षेत्र में 40 हाथियों का झुंड है।

ये हाथी झारखंड के सिमडेगा जिले से ओडिशा में प्रवेश किए हैं। इससे इलाके के लोग आतंकित हैं। सुंदरगढ़ सहायक वनांचल अधिकारी अनिल कुमार पुरोहितए सबडेगा वनांचल अधिकारी अंजना गर्डियाए ज़्लाक उपाध्यक्ष सुशांत बेहराए मनोज पटेल की मौजूदगी में बैठक हुई एवं हाथियों को दूर जंगल में खदेड़ने की रणनीति पर चर्चा की गई।ग्रामीणों के विरोध के चलते इस क्षेत्र से हाथियों को बाहर निकालना वन विभाग के लिए मुश्किल हो रहा हैए जिस क्षेत्र से होकर हाथियों का झुंड गुजरेगा उस क्षेत्र के लोगों को नुकसान होगी।

सिलिकॉन स्टील मिल में गैस सुरक्षा पर मॉक ड्रिल का आयोजन

राउरकेला ०१/१२ (संवाददाता):राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के सिलिकॉन स्टील मिल में गैस सुरक्षा पर एक मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य गैस रिसाव से उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयारियों को बढ़ाना था। ड्रिल में विशेष रूप से मिल के अमोनिया प्लांट में गैस रिसाव पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो वैधानिक आवश्यकताओं के अनुसार है। इस अवसर पर महाप्रबंधक प्रभारी (एसएसएम), श्री सी आर मिश्रा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। अज़्यास में तीन टीमों यानी भिडंत दल, बचाव दल और सहायक दल की सक्रिय भागीदारी शामिल थी। इन टीमों में सिलिकॉन स्टील मिल, सुरक्षा इंजीनियरिंग विभाग, अग्निशमन सेवा, ईएमडी, ओएचएससी और परिवहन विभाग के सदस्य शामिल थे। मॉक ड्रिल में विशेष रूप से विभिन्न एजेंसियों के प्रतिक्रिया समय और गैस रिसाव से संबंधित मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के पालन का आकलन किया गया। कार्यात्मक प्रमुखों और संबद्धित इकाइयों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विस्तृत विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया, जिसमें ताकत और सुधार के क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया। उल्लेखनीय है कि, आरएसपी नियमित रूप से रणनीतिक इकाइयों में इस तरह के मॉक ड्रिल का आयोजन करता है ताकि उच्च स्तर की तैयारी बनाए रखी जा सके और उत्पन्न होने वाली किसी भी आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।